अध्याय तीन

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप

चन्द्रकान्ता आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत की प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रगतिशील लेखिका हैं। उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने अपने मन के अंदरद्वंद्वों और समाज में घटित होने वाली विभिन्न प्रकार की नकारात्मक स्थितियों को पाठकों तक पहुँचाया। उन्होंने वही लिखा जो खुद भोगा, और जो दूसरों को भोगते देखा, महसूस किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में एक दायित्वपूर्ण लेखिका की भूमिका बखूबी से निभाने के साथ-साथ स्त्रियों की समसामयिक समस्याओं एवं स्वत्व के विविध रूपों का भी उल्लेख किया गया हैं।

प्रस्तुत अध्याय में स्त्री स्वत्व के विविध रूपों, स्त्री के समकालीन-युगीन परिवेशों, स्त्री विषयक परिस्थितियों, स्त्री की भीतरी एवं बाहरी दर्द भरी जीवनयापनों का अंकन स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया गया हैं। एक यथार्थवादी-आदर्शवादी लेखिका होने के नाते उन्होंने उपन्यासों माध्यम से मानवीय रिश्तों के विघटित मूल्यों, मानवीय बिखरावों, स्त्रियों की विसंगतियों के अव्यवस्थित परिणामों को उजागर किया हैं। उन्होंने समाज की पीड़ा को समझकर न्याय दिलाने का प्रयास किया है और साथ ही सामाजिक प्रतिबद्धता, मानवीय मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं और समाज में होने वाली समसामयिक समस्याओं और विसंगतियों के प्रति लोगों को जागरूक तथा अवगत करने में स्वप्रेरित चेतना का परिचय दिया है।

एक महिला की हैसियत से उन्होंने सदैव पाठकों के बीच रहकर स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का अध्ययन किया है तथा स्त्री के आन्तरिक एवं बाह्य जीवन के संघर्ष को जाना है। उनके विचार में, “महिला हूँ, पर लेखन खुद महिला समझकर नहीं किया। महिला-लेखन, पुरुष लेखन जैसी चीज़ मैं मानती नहीं।” [1] वे स्त्रियों को पारिवारिक सृष्टि में सक्षम, सामाजिक रूप से विवेकशील और अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक मानती हैं और स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से हकदार समझती है। उन्होंने अपने उपन्यासों में

समसामयिक व्यवस्था की विद्रूपताओं, स्त्री स्वत्व की जटिलताओं, सम्बन्धों के विघटनों, मनुष्य के यान्त्रिक विडम्बनाओं के माध्यम से स्त्री के सपनों, स्मृतियों और उम्मीदों को जीवित रखने का प्रयास किया है।

3.1 चन्द्रकान्ता के उपन्यास : एक अध्ययन

चन्द्रकान्ता ने कुल मिलाकर सात उपन्यास लिखे हैं, उनके उपन्यासों की शुरुआत समस्या प्रधान उपन्यास 'अर्थान्तर' से हुई। उनके दोनों लघु उपन्यास 'अर्थान्तर' और 'अंतिम साक्ष्य' एक ही जिल्द में प्रकाशित हुए और विषय एवं समस्या को तार्किक क्षमता से उभारने में वे सफल रही हैं। उनकी तार्किकता 'अर्थान्तर', 'अंतिम साक्ष्य', 'बाकी सब खैरियत है', 'ऐलान गली ज़िन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'अपने-अपने कोणार्क' और 'कथा सतीसर' उपन्यासों में देखी जा सकती है।

3.1.1 अर्थान्तर

'अर्थान्तर' सन १९८१ में प्रकाशित एक लघु उपन्यास है, जिसकी पूरी कहानी नायिका कम्मो के इर्द-गिर्द घूमती है। लेखिका ने कम्मो के माध्यम से वैवाहिक जीवन से जुड़ी विभिन्न प्रकार की समस्याओं, संघर्षों, भारतीय परिवारों में विद्यमान कर्तव्य की भावनाओं, दाम्पत्य मूल्यों के विघटनों और स्त्री के मानसिक एवं शारीरिक रूप से तनावपूर्ण ज़िन्दगी का भी समर्थन किया है।

कम्मो एक सुसंस्कृत मध्य वर्गीय परिवार में पली-बड़ी एक उच्च शिक्षित कामकाजी स्त्री होने के कारण, अपने आन्तरिक और बाहरी जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से विवश है। कम्मो का विवाह विजय नाम के एक आधुनिक सोच वाले युवक से हुआ है, जिसके एक ही समय में कई विवाह पूर्व और विवाहेतर अनैतिक अवैध सम्बन्ध हैं। कम्मो और विजय के बीच कई समस्याएँ हैं, जिनमें से एक यह है कि शादी के दिन, सुहागरात से पहले, विजय और पड़ोस में रहनेवाली तारा बुआ की बेटी ऊषी के साथ जो घटना घटी, उसे देखकर कम्मो को सिर्फ आघात ही नहीं बल्कि वैवाहिक जीवन की पवित्र संबन्धों का विश्वास भी टूट हो जाता है। कम्मो ने गलियारे के नीम अंधेरे में अपने पति और ऊषी को खड़े होकर

देखा। उषी विजय से कहती है, "तेरी दुलहन के बदले तो मेरा दिल धड़क रहा है, देखो तो।" [2] यह कहते हुए उषी विजय के दोनों हाथ खींचकर अपने उभारों पर रख देती है और यह देखकर कम्मो स्तब्ध हो जाती है। विजय का जूली के साथ विवाहेतर सम्बन्ध भी तनाव का एक मुख्य कारण बन जाता है।

यहाँ लेखिका ने अस्तित्वहीन, आत्मसम्मानहीन स्त्री के मानसिक तनाव, अंदरद्‌वंद्‌व, विसंगतियों, आत्मसंघर्ष, कुंठाओं, पीड़ाओं, विद्रूपताओं तथा संघर्षभरित ज़िन्दगी से त्रस्त स्त्री की मानसिक चेतना का चित्रण किया है। कम्मो की कहानी सिर्फ एक मध्यवर्गीय शिक्षित कामकाजी स्त्री का संघर्षपूर्ण जीवन नहीं है, बल्कि सामयिक परिप्रेक्ष्य में टूटे हुए वैवाहिक जीवन से पीड़ित और विघटित मूल्यों वाली हज़ारों संस्कार सम्पन्न स्त्रियों की त्रासदी है।

उपन्यास में तारा और उसकी बेटी उषी की कहानी है, जो उपन्यास की मूल कथा का समर्थन करने में मदद करता है। कम्मो के जीवन में शर्मा और प्रशान्त नाम के दो पुरुष आते है, सत्य शर्मा कम्मो के अकेलेपन का फायदा उठाता है और प्रशान्त उसे अपने घर और परिवार पर खुशी से ध्यान केन्द्रित करने के लिए मनाता है। अनेक मानसिक एवं शारीरिक संघर्षों के बावजूद कम्मो वैवाहिक सम्बन्धों को कायम रखने को प्राथमिकता देकर अपने पुत्र निपू के उज्वल भविष्य की प्रतीक्षा करती है; तथा जीवन के बदलते सन्दर्भ में यह खोयी हुई परम्परागत नैतिकताओं एवं आकांक्षाओं का पुनः परीक्षण करती है। हालाँकि, उपन्यास इस सच्चाई की ओर इशारा करती है कि कोई भी स्थिति और सन्दर्भ अन्तिम नहीं है। प्रस्तुत उपन्यास में चन्द्रकान्ता ने दाम्पत्य जीवन के दोनों पक्षों पर प्रकाश डाला है।

3.1.2 बाकी सब खैरियत है

सन १९८३ में प्रकाशित 'बाकी सब खैरियत है' एक संयुक्त मध्यवर्गीय परिवार की बड़ी बहू पारुल और छोटे देवर अनु के इर्द-गिर्द घूमती है। एक संस्कारशील परिवार की बेटी पारुल स्वत्व को त्यागकर ससुराल और परिवार की सेवा में लगी रहती है। यहाँ लेखिका ने पाश्चात्य संस्कृति से रंगी मध्यवर्गीय सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महत्वाकांक्षी अनु के

बदलते मानवीय मूल्यों की जाँच की है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है- " 'बाकी सब खैरियत है' में लेखिका ने यह दिखाने का प्रयन्त किया है कि किस प्रकार एक संयुक्त परिवार में छोटा भाई विदेश जाकर आज की उपभोगवादी संस्कृति में इतना रंग जाता है कि सारे पारिवारिक मूल्यों को ताक पर रखकर अपने माँ-बाप, भाई-भाभी सभी से भावनात्मक स्तर पर अपने को अलग कर लेता है।" [3]

यहाँ आर्थिक असन्तुलन के कारण बिगडे मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार के पवित्र बन्धन के बनने-बिगड़ने की बुनियादी समस्याओं को समझाने के साथ-साथ अपने पुत्रों की आर्थिक स्थिति को महत्व देकर उसीके अनुरूप सम्बन्धों का निर्वाह करनेवाले माता-पिता के स्वभाव से उत्पन्न समस्याओं और संघर्षो का उल्लेख किया गया हैं। माता-पिता, दो बेटे, उनकी पत्नियाँ और तीन बच्चों वाले परिवार में पिता अपने बड़े बेटे को पढ़ाई में ज़्यादा सहयोग नहीं दे पा रहे थे, क्योंकि वह किसी कार्यालय में साधारण पद पर था। बड़ा बेटा विनू भी बाद में एक साधारण सी नौकरी करता है और साल भर में एक-दो महीने के लिए छुट्टी पर आता है। छोटा लड़का अनुपम डॉक्टर् है जिसे एक गुजराती लड़की से प्यार हो जाता है, लेकिन लड़की किसी और से शादी कर चली जाती है। पागल-सा बना अनु कैनडा में आगे की पढ़ाई करने की कोशिश करती है और उसे आंशिक अनुदान के साथ कैनडा जाने की अनुमति मिल जाती है।

जब अनु को विदेश में पैसों की ज़रूरत पड़ी तो उनके एक दोस्त और माता-पिता ने अपने गहने बेचकर उन्हें पैसे भेजे, लेकिन उनके बड़े भाई चाहकर भी पैसे नहीं भेज सके। अनु ने स्थिति को जाने बिना 'सैडिस्टिक' होकर मौके-बे-मौके पर कई बार भाई और भाभी का अपमान किया। जब माता-पिता द्वारा आर्थिक रूप से वंचित एवं अभावग्रस्त जीवन बिताने वाले बड़े बेटे की तुलना विदेश में सुखसम्पूर्ण समृद्ध छोटे बेटे से करते हैं, तो विनू इसका शिकार बन जाता है, व्यथित हो जाता है और दोनों पति-पत्नी को अपमान का जीवन जीना पड़ता है।

अनु का जीवन के प्रति दृष्टिकोण तब बदल जाता है जब वह सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं और परिपूर्ण विलासिता से भरे विदेशी देश में होता है और वह सोचता है कि पैसा ही सब कुछ है। उसका कहना है कि, "मगर 'अरेंज्ड मैरेजिज' ज़रूरी क्यों है? क्यों अभी भी तुम लड़के-लड़की को अपनी ज़िन्दगी खुद बनाने नहीं देते, अपना साथी खुद चुनने नहीं देते? मैं सोचता हूँ यह हमारा प्यार, यह अनावश्यक चिन्ता, हमारे बच्चों को कितना गैर ज़िम्मेदार बनाते हैं? बचपन से लेकर जवानी तक हम उनके लिए रास्ते क्यों बनाते हैं? क्यों हम दूसरे देशों की तरह अपने बच्चों को इस काबिल नहीं बनाते कि वे अपने फ़ैसले खुद कर सकें और अपनी गलतियों से आप सीखें...।"[4]

अपनी गर्लफ्रेंड सीमा से चोट खाने पर अनु ने अपनी भाभी से कहा था कि वह उसी लड़की से शादी करेगा जो परिवार को पसन्द आएगी। पारुल ने उसके लिए लम्बी चोटी, गर्दन से ऐडी तक साडी-ब्लाउज़ पहनी टिपिकल यू.पी. ढूँढी, लेकिन जब उसकी शादी हो गई और वह कनाडा चली गई, तो उसका रूप बदल गया और जीन्स, टाप और गर्दन तक हुए बालों में उसे पहचानी न पाती थी। लेखिका ने विदेश में रहने वाले सदस्य की नियति के कारण त्रासदमय जीवन जी रहे परिवार की दुर्दशा का चित्रण करने के साथ समकालीन परिस्थितियों और पारिवारिक सम्बन्धों को बनाए रखने में सदस्यों की मानसिकता की भूमिका से भी अवगत हुआ है। अपने पति-पुत्र, सास-ससुर की सुख सुविधाओं में व्यतीत होने वाली पारुल के व्यक्तित्व की गरिमा पर भी प्रकाश डाला गया है।

यहाँ सास-बहू के मानसिक सम्बन्धों का यथार्थ चित्रण करने के साथ उस सास के दूषित व्यवहार को भी दर्शाया गया है जो अपने पति, पुत्र, सास-ससुर की सेवा करते हुए भी अपनी बहू को प्रताड़ित करती है। पारुल जैसी हज़ारों महिलाएँ हैं जो आख़िर तक अपने मन से जी नहीं पातीं। उपन्यास जिन बुज़ुर्गों को समर्पित है, उनकी पीढ़ी आखिरी साँस तक अपने तरीके से जीना चाहती है। इतना सब कुछ होने के बाद किसी से यह कहने के लिए कहा जा सकता है कि 'बाकी सब खैरियत है', लेकिन 'खैरियत' कहाँ होगी? लेखिका का मानना है कि

प्रत्येक परिवार में पारस्परिक सामंजस्य की कमी एवं पीढ़ियों के अन्तराल से उत्पन्न संश्लिष्टपूर्ण स्थितियों से रिश्ते में मूल्य विघटन पाया जाता है।

3.1.3 ऐलान गली ज़िन्दा है

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास पूरी तरह से आँचलिक है और यह गली से शुरू होकर गली में ही खत्म होता है। उपन्यास का आरम्भ ही ऐसी गली से होता है जिसमें हम अँधेरे को छू सकते हैं। उपन्यास की कथावस्तु कश्मीर की एक गली में रहने वाले विभिन्न जातियों, धर्मों और वर्गों से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग-अलग पहचान की कहानी है। इसमें रत्नी, पुरोहित संसारचन्द्र, अरुन्धती, मास्टर दयाराम, काका कण्ड, अनवर मियाँ आदि पात्र शामिल हैं।

ऐलान गली में कई पीढ़ियों के लोग बदले हुए सन्दर्भ के अनुसार जीने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, जबकि युवा पीढ़ी आजीविका की तलाश में गली से पलायन कर रही है, लेकिन वे अपने गली के संस्कारों एवं मूल्यों को नहीं भूले हैं। गली में दरिद्रता, अज्ञानता और जीवन की मूलभूत तथा बुनियादी आवश्यकताओं की कमी के बावजूद भी मुस्लिम, हिन्दू और सिख सभी एक साथ रहते हैं, बिना किसी भेदभाव के अपने सुख-दुख बाँटते हुए एक साथ जीवनयापन करते हैं, जो साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है, इसलिए लेखिका ने 'ऐलान गली ज़िन्दा' को 'ज़िन्दा' घोषित किया है।

जिस कश्मीर में कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े मकान जन्नत कहलाते थे, आज उस कश्मीर में सिर्फ नसीमबाग, शालीमार, निशातबाग ही बचे हैं और आतंकवादियों के कारण पर्यटकों का आना भी कम हो गया था। इसमें जहाँ लेखिका द्वारा भोगे गए कड़वे यथार्थ की अभिव्यक्ति है, वहीं अपने भोगे हुए सत्य को भी व्यक्त करती है। समकालीन जीवन की विसंगतियों, विघटित मूल्यों, बदलते रिश्तों तथा आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न व्यवस्था के दुष्परिणामों को उनकी रचनाओं का विषय बनाया गया है। लेखिका ने ऐलान गली का भौगोलिक वातावरण, संस्कृति-सभ्यता, वेशभूषा, रीति-रिवाज़, पारम्परिक

रूढ़ियाँ, सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था, जीवन शैली, लोकगीत, लोककथाएँ आदि का चित्रण किया है।

यहाँ चन्द्रकान्ता ने आम आदमी की चुनौतियों को उसके अंतरंग परिवेश की विसंगतियों, विद्रूपताओं, द्वंद्वों, संघर्षों, राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से चित्रित किया है। वे साफ कहती हैं, "लेकिन हाँ ! किसी गलत फ़हमी में मत पड़िए। मैं आपको कहानी नहीं सुना रही, ज़िन्दगी दिखा रही हूँ। यों भी कहानी जब ज़िन्दगी बन जाती है तो खूबसूरती में बदसूरती मिल ही जाती है। तो आइए।" [5]

यह एक नारी-सचेतन उपन्यास होने के बावजूद एक कुशल समाज शास्त्रवेत्ता के रूप में सामाजिक सन्दर्भ के मानदण्डों को समाहित करते हुए विभिन्न वर्ग के लोगों की समस्याओं की अभिव्यक्ति को प्राथमिकता देते हैं। गोपाल राय ने लिखा है- " 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में श्रीनगर की ऐलान गली में कई पीढ़ियों के एक साथ रहते-जीते परिवेश को एक गहरे दर्द के साथ उकेरा गया है। यद्यपि जीविका की खोज में युवा पीढ़ी इस गली से पलायन कर रही हैं, पर गली अपनी साँस्कृतिक और राजनीतिक विश्वस्थताओं में ज़िन्दा है और बाहर जाने वाले भी इसे भुला नहीं पाते।" [6]

लेखिका को इस गली के प्रति विशेष आकर्षण है क्योंकि उनका बचपन इसी गली से होकर गुज़रा है। धरती के स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में स्थित यह गली न केवल गन्दी, बदबूदार और अँधेरी है, अपितु गरीबी, अज्ञानता और अभाव में पल रहे लोगों के अंदरूनी रहस्यों को भी उजागर करती है। लेखिका ने यह दिखाने के लिए इस अंधियारी गली को चुना है कि स्वर्ग के निकट नरक भी है। "जहाँ कचरा है, सीलन है, कीचड़ है। जहाँ मुँहफ़ट रत्नी को अनेक शिकायतें हैं, दुख है, क्रोध है और जहाँ सदियों पुराने मूल्य-मान्यताओं पर आँख-कान मूँदकर चनलेवाली अरुन्धती-सी 'साफ-पाक-दामनवाली' धर्मभीरू औरतें हैं।" [7]

इसमें ऐलान गली के निवासियों के बीच आपसी सम्बन्धों के विभिन्न आयामों और गली के सभी घरों के कन्धे से कन्धा जोड़कर खड़े होने के दृश्यों का उल्लेख है। पुरुषों की

संकीर्ण दृष्टि के कारण समाज में स्त्रियों को कई प्रकार की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। देह-बोध से मुक्ति पाकर अपने अस्तित्व के लिए नारी के संघर्ष को कुछ प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से दर्शाया गया है। इसमें पुरुषों और महिलाओं के बीच प्रेम सम्बन्धों और विवाह की समस्या पर ध्यान केन्द्रित करके वर्तमान समाज में स्त्रियों की स्थिति को जानने के साथ-साथ धार्मिक और साँस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं को भी महत्व दिया गया है।

3.1.4 अन्तिम साक्ष्य

'अंतिम साक्ष्य' जम्मू नगर के परिवेश से जुड़ी राजपूत परिवार की स्मृत्यावलोकित कथा है। सम्पूर्ण उपन्यास में बाऊ जी प्रताप सिँह, बीजी, मीना मौसी, विकी एवं सुरेश का जीवन पूर्वदीप्ति शैली में प्रस्तुत किया हैं। उपन्यास के प्रारम्भ में ही बाउजी की मृत्यु का संकेत दिया गया है और कालान्तर में उनकी पत्नी बीजी की भी मृत्यु हो जाती है और उनके दो बेटे विकी और सुरेश अकेले रह जाते हैं।

यह एक मध्यवर्गीय परिवार के सुखमय जीवन-यापन की कहानी होने के अलावा, प्रताप सिँह-मीना मौसी के विवाहेतर अवैध प्रेम-सम्बन्ध के कारण शिथिल एक दाम्पत्य बिखराव के दयनीय चित्रण की भी कहानी है। जैसे ही गृहिणी बीजी को इस अवैध सम्बन्ध के बारे में पता चला तो उसे फोड़े की तरह दुखने लगा। चन्द्रकान्ता ने मीना के प्रति आकर्षण के बारे में लिखा है- "बार-बार भीतर के उस खालीपन से त्रस्त बाऊ जी मीना मौसी को नितान्त वैयक्तिक कोने में समेटने को क्यों और कैसे बेताब हो उठे, इसके बारे में अपने साथ अनेक तर्क-वितर्क करने के बाद भी वे कोई उत्तर न पा सके। शायद कई प्रश्नों का उत्तर होता भी नहीं।"[8]

मीना-बाऊ जी के अवैध सम्बन्ध के कारण बीजी की मानसिक और शारीरिक स्थिति पूरी तरह से खराब हो जाती है। एक मध्यवर्गीय सुख सम्पन्न परिवार की आदर्श पत्नी होने के बाद अपना अस्तित्व खो चुकी बीजी इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। लेकिन उसने कभी भी अपने पति के खिलाफ कोई समस्या नहीं उठाई, शिकायत नहीं की या विद्रोह

नहीं किया, बल्कि वह अंतर्मन से उलझन, संघर्षभरित और तनावग्रस्त महसूस करते हुए अकेले कोने में बैठी रही। वह अपने पति के अवैध सम्बन्ध को अपनी आँखों से देखकर आघात में थी। पूरे दिन और रात अस्तित्वहीन चिन्ताओं में डूबे रहने के बाद अंततः बीजी की मृत्यु हो जाती है। पत्नी की मौत के पन्द्रह दिन बाद जब प्रताप मीना को घर ले आए तो बच्चे नौकरी के बहाना बनाकर घर छोड़कर निकल गए। प्रताप की मौत के बाद बेटा विकी, मीना को अपने साथ ले गया।

उपन्यास में बीजी की कहानी के साथ-साथ मीना मौसी की समानान्तर पूर्वदीप्ति कहानी भी चलती है। मीना की कोठे वाली ज़िन्दगी की कहानी यह है कि पहले उसकी शादी एक बूढ़े आदमी से की गई, बाद में उसे वापस चाची के पास लौटा दिया। फिर चाची ने उसकी शादी जगन जैसे गुंडे से कर दी, जिसने उसके साथ मौज-मस्ती की और उसे मदनलाल दलाल के माध्यम से कोठेवाली को बेच दिया। वहाँ उसकी मुलाकात एक दयालु संगीत मास्टर से होती है, जिसकी मदद से वह एक रेडियो स्टार बन जाती है।

बीजी की मृत्यु के बाद घर की जो हालत टूटी वह अन्त तक जुड़ नहीं सकी। मीना मौसी का आगमन भी उसे नहीं उबार सका। बाऊ जी और मीना के बीच सदैव एक अशुभ सन्नाटा छा गया। बाऊ जी को अपनी पत्नी बीजी की मृत्यु के पन्द्रह दिन बाद ही मीना को घर नहीं लाना चाहिए था, न ही उसे दुल्हन बनना चाहिए था और न ही रखैल। दोनों लड़कों को लगता था कि उनकी माँ की मौत के लिए मीना ही ज़िम्मेदार है।

हालाँकि लेखिका एक ऐसी महिला के जीवन को प्रस्तुत करना चाहती थीं जो अपने जीवन में सब कुछ खो चुकी है, लेकिन पूरे उपन्यास में वह इसे ढंग से साबित नहीं कर पाईं और बातों में ही उलझ गईं। प्रस्तुत उपन्यास में मीना के अनमेल विवाह, उससे उत्पन्न नियति और विवाहेतर सम्बन्धों का निरूपण किया गया है। यथार्थतः यह उपन्यास मातृ-पितृ विहीन और अनाथ मीना के असहाय ज़िन्दगी का दस्तावेज़ है।

3.1.5 यहाँ वितस्ता बहती है

चन्द्रकान्ता का प्रमुख उपन्यास 'यहाँ वितस्ता बहती है' का प्रकाशन सन १९९२ में हुआ है। यहाँ लेखिका ने कश्मीर के लोक जीवन, संस्कृति और सभ्यता तथा आज़ादी से बदले कशमीर के महौल का यथार्थवादी चित्रण किया है। यहाँ कश्मीर में पारम्परिक परिवेश से लेकर गई तीन पीढ़ियों के संघर्ष और मानवीय सरोकारों के दौर में फैले आतंकवाद से पैदा हुई आम लोगों की समस्याओं को उजागर किया गया है।

इस उपन्यास की कथावस्तु कश्मीर में रहने वाले राजनाथ और उनकी तीन पत्नियों के इर्द-गिर्द घूमती है। एक प्रतिभाशाली मेधावी, विद्यार्थी-प्रिय प्रोफेसर, समाज सुधारक और पुरानी रूढ़ियों के विरोधी होने के बावजूद, राजनाथ ने क्रमशः सुभद्रा, गौरी और देवकी से तीन बार विवाह किया। अपनी पहली पत्नी सुभद्रा की भयानक बीमारी के कारण मृत्यु के बाद उन्होंने गौरी से दूसरी शादी की।

उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने एक 'बेहतर इन्सान और बेहतर समाज' की उम्मीद करने के साथ-साथ पूरे कश्मीर के सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और साँस्कृतिक परिवेश एवं व्यवस्थाओं से पीड़ित मध्यमवर्गीय परिवारों के दर्द और व्यथा-कथा की कहानी प्रस्तुत की है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में लेखिका लिखा है कि- "क्या ज़िन्दगी जी राजभाई ने। जहाँ कदम रखा, लोग आदर-भाव से झुक-झुक गये। क्या इज़्जत मिली कि राजा-महाराजाओं को भी नसीब न होगी। लेकिन दुश्मन भी कम न रहे। ज्यों पहाड़ों पर गुच्छियाँ फूट आयें। पर डटकर सामना किया। अन्त में इस मैदाने जंग में जो गिरे, सो आखिरी साँस तक लड़ते-लड़ते दम तोड़ दिया।" [9]

उपन्यास में पारिवारिक समस्याओं के मूल में आर्थिक अभाव, बेरोज़गारी, नगरोन्मुखता, अशिक्षा एवं आवास समस्याएँ, धार्मिक कट्टरता के कारण सार्वजनिक जीवन में असुरक्षा का चित्रण, अनमेल विवाहों से उत्पन्न समस्याएँ, विधवा पुनर्विवाह, अन्तर्धार्मिक विवाह तथा विवाह पूर्व अवैध सम्बन्धों के कारण उत्पन्न समस्याएँ, नि: स्वार्थ एवं

कर्त्तव्यनिष्ठ नेतृत्व के अभाव के कारण उत्पन्न होने वाली राजनीतिक समस्याएँ और स्त्री स्वत्व के विवध रूपों का कुशल चित्रण अंकित किया गया हैं।

उपन्यास के सम्बन्ध में डॉ. रामचन्द्र तिवारी का मत है- "'यहाँ वितस्ता बहती है' में एक शिक्षाविद और आदर्शवादी नागरिक राजनाथ कौल के जीवन को केन्द्र में रखकर कश्मीर के उस गरिमामय जीवन-पेयवाह को अंकित किया गया है, जो परिवर्तन के क्रम में क्रमशः उन पारस्परिक जीवन-मूल्यों से दूर हटता गया है, जिसके आलोक से प्रेरणा लेकर हम भविष्य को भी महनीय बना सकते हैं।" [10]

उपन्यास में यह भी निरूपित किया गया है कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में दहेज प्रथा एक विकराल के रूप में विद्यमान है फिर भी लोग विवाह में दहेज देने के लिए मजबूर होते हैं क्योंकि कम दहेज मिलने पर ससुराल वाले लड़की को मानसिक एवं शारीरिक कष्ट देते हैं। राजनाथ ने अपनी बेटियों को प्रेरित करने के लिए घर में एक पुस्तकालय बनाया और उनका विचार एवं दृष्टिकोण यह था कि बेटियों में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की क्षमता को विकसित करने के लिए शिक्षा आवश्यक है। लेखिका ने राजनाथ के ज़रिए अपनी बेटियों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए लिखा है कि- "कन्याजन्म के कारण शापित, माता-पिता पर बोझ बनने की अपराधिनी, तानों-तिशनों और हिकारत की शिकार ये लड़कियाँ! क्या इन्हीं के लिए हमारे पूर्वज अर्धांगिनी, सहभागिनी, पूजनीय आदि-इत्यादि विशेषणों का प्रयोग करते थे? पूजरे-पुजारे की बात तो भूल जाइए, पर इन्हे थोड़े सम्मान के साथ जीने का अधिकार तो मिलना ही चाहिए।" [11] इस उपन्यास में नारी शोषण की भयावह स्थिति एवं समस्या परिलक्षित होती है।

3.1.6 अपने-अपने कोणार्क

सन १९९५ में प्रकाशित 'अपने-अपने कोणार्क' में उड़ीसा की साँस्कृतिक विरासत के दो पहलू पुरी और कोणार्क मौजूद हैं। प्रस्तुत उपन्यास कोणार्क यानी कश्मीर से उड़ीसा तक की सफर है, जहाँ लेखिका ने छः साल बिताए और वहाँ की जीवनशैली, लोक रंग और परम्पराओं की झलक इस उपन्यास में मिलती है तथा उडीया के लोग लोग सुसंस्कृत और अन्धविश्वासी

दोनों हैं। 'अपने-अपने कोणार्क' की कहानी एक संस्कार सम्पन्न मध्यवर्गीय शिक्षित परिवार की बड़ी बेटी कुनी के इर्द-गिर्द घूमती है। उच्च शिक्षा प्राप्त कुनी अध्यापिका की नौकरी करती हैं। उनके पिता एक बड़े परिवार के मुखिया है तथा सात ज़िम्मेदार सन्तानों के पिता है, उन्होंने ए.जी आफ़िस पद से कुछ वर्ष पहले सेवानिवृत्त हुए।

इन्द्रा माता सात बच्चों को जन्म देकर धोबिन की भाँति निस्तेज़ हो गई हैं और 'टुटुल' के बाद वह कुछ सनक भी गई हैं। बप्पा के मन में हौंस था कि आठवाँ गर्भ ज़िन्दा रहे पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। दादी ने सभी बच्चों को प्यार से पालन-पोषण देने का पूरा ध्यान रखा। उस घर में यह एक विशेष सलाह थी कि पत्नी सुधैर्य होनी चाहिए और परिवार की इच्छाओं के आगे अपनी कोई भी इच्छा नहीं रखनी चाहिए। परिवार की सबसे बड़ी बेटी कुनी पर परम्परा को आगे बनाए बढ़ाने की बड़ी ज़िम्मेदारी है।

उपन्यास की कथा में चित्रित वस्तु पर डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने कहा है- "'अपने-अपने कोणार्क' कुनी नाम की एक ऐसी लड़की की कहानी है, जो पेश से शिक्षित है, आधुनिक जीवन- मूल्यों से अपरिचित नहीं है, किन्तु पारम्परिक रक्षणशील संस्कृति की मर्यादा में कैद, पर-पुरुष से प्रेम को पाप समझती है।" [12] कोणार्क उपन्यास में लेखिका ने जीवनानुभवों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति की है और साथ ही दहेज की समस्या के नेपथ्य में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का अंकन, प्रेम-विवाह की समस्या, पारिवारिक दायित्वों निभाने के लिए प्रतिबद्ध स्त्री की मानसिक तनावों आदि को नायिका कुनी के द्वारा चारित्रांकित किया है।

3.1.7 कथा सतीसर

'कथा सतीसर' का प्रकाशन सन २००१ में हुआ। 'ऐलान गली ज़िन्दा है' और 'यहाँ वितस्ता बहती है' के बाद 'कथा सतीसर' भी कश्मीरी जीवन के महा दुख की गाथा है। कश्मीर की वास्तविक स्थिति का अंकन आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक और राजनीतिक विसंगतियों के द्वारा अभिव्यक्त किया हैं। लेखिका के शब्दों में- "आज के आतंक जर्जर कशमीर की कथा लिखना अपने आप में एक चुनौती था। मैंने इस चुनौती को स्वीकार कर कश्मीर प्रदेश, पौराणिक सतीसर और आज के कश्मीर को कथा का केन्द्र बनाया।" [13]

प्रस्तुत उपन्यास के लेखन के सम्बन्ध में चन्द्रकान्ता ने लिखा है- " 'कथा सतीसर' में मैंने मानवीय अधिकार और अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को, पात्रों के माध्यम से उठाया है। एक रची-बसी संस्कृति के विखंडन की त्रासद परिणतियों से जुड़े सवालों और मानवीय यातना से जुड़े इन प्रश्नों का उत्तर तलाशते, व्यवस्था का परीक्षण ज़रूरी था। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कारणों को खोजना लाजिमी था। मेरा मानना है कि जहाँ बिखंडन और विध्वंस के कारण होते हैं वहीं कहीं आस पास उन स्थितियों के निन्दा की सम्भावनाएँ भी छिपी होती हैं। इसलिए कश्मीरी मानस और जनजीवन में गहरे उतरकर 'कथा सतीसर' लिखना मेरे लिए ज़रूरी हो गया।" [14]

लेखिका ने कश्मीर के सम्पूर्ण जीवन का सजीव चित्रण किया है। वर्तमान युग में कश्मीर का नाम सुनते ही रक्तरंजित आतंकवाद से घिरे एक राज्य की तस्वीर सामने आती है लेकिन वास्तव में ये कश्मीर का असली रूप नहीं है। कश्मीर को 'धरती का स्वर्ग' कहा जाता है और यह बात गलत भी नहीं है लेकिन राजनीतिक दावपेंचों के दुष्प्रवृत्ति के कारण ही कश्मीर की तस्वीर बदल गई है। 'कथा सतीसर' का मुख्य उद्देश्य कश्मीर के वास्तविक स्वरूप, उसके सम्पूर्ण सामाजिक, राजनीतिक एवं साँस्कृतिक परिवेश की झलक को जनमानस तक पहुँचाने के साथ साथ कश्मीर की समस्याओं का नग्न चित्रण करना भी है। यहाँ अनमेल विवाह और असफल दाम्पत्य जीवन को भी दर्शाया गया है। चन्द्रकान्ता, कश्मीर से सम्पृक्त होने के कारण वहाँ के आतंकवाद के स्वरूप को देखा और अनुभव किया है, इसलिए उसका प्रामाणिक चित्रण भी किया है।

3.2 चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप

भारतीय संस्कृति विश्व में सर्वाधिक उदार और श्रेष्ठता के रूप में विख्यात है। इस संस्कृति ने पुरुषों और स्त्रियों की सन्तुलित जीवन शैली का रूप अपनाया था। प्राचीन काल में स्त्री और पुरुष दोनों को ही महत्वपूर्ण स्थान था। लेकिन धीरे-धीरे दोनों के सामाजिक दृष्टिकोण में अन्तर आ गया। हालाँकि, प्रकृति की दृष्टि से पुरुष और स्त्रियाँ कई मायनों में भिन्न होते हैं।

बदलते परिवेश, सामाजिक दृष्टिकोण और विशेष स्वभाव के कारण महिलाओं में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन वैदिक काल से लेकर आज तक की स्त्रियों के व्यक्तित्व में प्रगतिशील परिवर्तन और नये दृष्टिकोण का उदय हुआ है। चर्चित उपन्यासों में चित्रित स्त्री स्वत्व के विविध रूपों का अध्ययन करते समय प्रत्येक स्त्री के विभिन्न प्रकार की स्वत्वों का चरित्र चित्रण को विशेषणों का आधार बनाया गया हैं।

3.2.1 प्राचीन विचारधारा से प्रभावित स्त्री

सामाजिक विचारधारा में बदलाव और परिवर्तन लाना स्वाभाविक है, जो प्राचीन और आधुनिक दोनों के बीच के प्रगति को दर्शाएगा। विचारों का संक्रमण सदैव होता है परन्तु किसी विशिष्ट परिस्थिति में युगीन विचारों और मूल्यों में अन्तर आ जाता है। स्वतंत्रता के दौर में जिन आदर्शों और मूल्यों को अपनाए गए थे, उन्हें आज त्याग दिया गया है। परन्तु ऐसे कई प्राचीन मूल्य हैं जो आज भी समाज में स्वीकार्य हैं, जिनके प्रभाव आज भी एक महिला बचपन में अपने माता-पिता, जवानी में अपने पति और बुढ़ापे में अपने बेटे पर निर्भर एवं आश्रित रहती है। आज भी स्त्रियाँ विभिन्न सामाजिक प्रतिबन्धनों, मान्यताओं और कुप्रथाओं में जखड़ी हुई हैं। न तो उसे पढ़ने-लिखने की इजाज़त है, न घर से बाहर निकलने की अनुमति है, और न ही अपने बारे में खुलकर सोचने का अवकाश है। वह अपनी बात खुलकर भावाभिव्यक्ति भी नहीं कर पाती। स्त्री अपने पति को परमेश्वर के रूप में देखती है, चाहे उसका पति कितना भी कुकर्मी या अत्याचारी क्यों न हो, वह उसके चरणों में दासी होकर या गुलाम बनकर रहना स्वीकार करती है। सामाजिक नैतिकता के नियम अकेली स्त्री के लिए बनाये गये। विवेचित उपन्यासों में भी प्राचीन विचारधारा से प्रभावित स्त्री पात्र दृष्टिगोचर होते हैं।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की नायिका बीजी घरेलू स्त्री है जो प्राचीन पारिवारिक मूल्यों को महत्व देती है। उसका अपने पति और बच्चों के पालन-पोषण में आत्म-सन्तुष्ट भी है, लेकिन जब बीजी अपने पति को मीना की ओर आकर्षित होकर प्यार का राग आलापते हुए देखा तो वह स्तब्ध हो जाती है। एक प्राचीन विचारधारा वाले मध्यवर्गीय सुसंस्कृत परिवार

की बीजी ने दोनों के अन्तरंग एवं घनिष्ठ सम्बन्धों से दुखी होते हुए भी कभी अपने पति पर क्रोध या विद्रोह नहीं किया, बल्कि मौन रहकर उनकी छोटी-मोटी ज़रूरतों को पूरा करती रहीं। लेकिन वह अपने पति और मीना के रिश्ते से दुखी थी और अन्त में अपने पति के मीना के प्रति खिंचाव और आकर्षण को स्वयं की हार मानकर दम तोड़ देती है और घूट-घूट अस्तित्वहीन होकर अंततः मर जाती है। "वह उस घर-परिवार की बेटी थीं, जहाँ न जाने कितनी पीढ़ियों से माँ बेटी को और बेटी अपनी कोखजायी को आदर्श नारियों के शील-संस्कार दिमागों में ठूंस-ठूंसकर भरती आई है।" [15]

'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में अनु की माँ प्राचीन विचारों में डूबी हुई महिला हैं। जब बहू पारुल को संगीत के कार्यक्रम हेतु स्टेशन में आमंत्रित किया जाता है तो उसकी सास उसका विरोध करती है और बेटी सरो का उदाहरण देते हुए कहती है कि- "बेचारी सरो को तो दस जमात के आगे इसी डर से न पढ़ाया कि कॉलेज में लड़कों के साथ पढ़ना पड़ता। सोचा, मुहल्ले-टोले के लोग बात करेंगे। ....अब कोई कहे कि बहू गा-बजाकर पैसे कमाने लगी है, तो मैं किस कुएँ में डूबकर जान दूँगी, यह भी तो बताया दो।" [16]

प्राचीन मूल्यों को अनावश्यक महत्व देकर सास हमेशा बहू के खिलाफ खड़ी रहती थी, एक स्त्री होने के नाते, स्त्रियों की स्वतंत्रता के खिलाफ रहकर वह पास पड़ोस की औरतों से बहू की शिकायत करते हुए कहती थी- "एक मैं थी जो सास का सिर ज़रा-सा दुखता तो घण्टों बैठी सिर दबाती। इधर लत्ते दर्द से खींची जा रही हैं, मगर कोई मलहम तक नहीं लगाता।" [17]

सास का अपनी बहू पर अनुशासन तब से शुरू हुआ जब पारुल की शादी हो गई। पारुल को अपनी सास के इजाज़त के बिना घर से बाहर कदम भी नहीं रखने देती थी। उसे अपनी सास की पसन्द के कपड़े पहनने पड़ते थे और अपने बक्सों और अलमारियों की चाबियाँ उसे देनी पड़ती थीं। एक बार जब वह अपने बालों को रिबन से बाँधकर किसी रिश्तेदार के यहाँ जाने के लिए निकलती है तो उसकी सास बहुत गुस्सा हो जाती है और उस

पर आरोप लगाते हुए उसे अपने बालों को फिर से बाँधने के लिए कहती है और उसे जूड़ा बँधवाने का आदेश देती है।

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की अरुन्धती प्राचीन विचारधारा से ओत प्रोत मूल्यों से प्रभावित है। वे सदैव धार्मिक पूजा पाठ, व्रत-उपवास आदि पारम्परिक कर्मकाण्डों या रीति-रिवाज़ों में व्यस्त रहते हैं और शादी-ब्याह को भी पारम्परिक ढंग से करना चाहते हैं। साल में दो मोटी-मोटी साड़ियाँ और भगवान के दर्शन के लिए हारी पर्वत पर जाने के अलावा और कोई अपेक्षा नहीं है। अवतारे माँ के बारें में कहता है, "वह घर के लिए बनी थी, घर में जन्मी, घर में खटती और अन्ततः घरवालों की सेवा करती, घर में ही मरने को जीवन की महान उपलब्धि समझती थी। और खुश थी, जिस हाल में 'वह' रखे, उसी हाल में। कभी-कभी वह अवतारे से कहती थी, "परमात्मा का शुक्र है, जो उसने सबकुछ दिया है। एक हमारी देदी थीं (सासजी) जो बेचारी घर-भर को खिलाकर खुद चावल की पीच साग के साथ घोलकर पीने पर भी सन्तुष्ट थीं। हमें तो भगवान ने सबकुछ दिया है।" [18] जब अरुन्धती की आँखों की रोशनी कम हो गईं तो उनके पति उन्हें डॉक्टर के पास ले गए और चश्मा लगाने की सोची, लेकिन उन्होंने ऐनक इसलिए इनकार कर दिया है कि ऐनक लगाना 'फैशनवाली' औरत का काम लगता है। प्रस्तुत उपन्यास की लच्छी चाची भी इन्हीं विचारों से प्रभावित दिखाई देती हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की नायिका कुनी रक्षणशील परिवार की बेटी है। परिवार, परिवेश, माँ और दादी के प्राचीन संस्कार मूल्यों को अपनाते हुए वह अपने पिता द्वारा सिखाए पगडंडियों पर आँख मूँदकर चलती है। उनकी दादी भी इन्हीं विचारों से प्रेरित हैं कि पत्नी के लिए पारिवारिक परम्पराओं से बँधा होना ज़रूरी है। कुनी प्राचीन और आधुनिक विचारों की नायिकाओं के बारें में सोचती रहती हैं कि "सीता, द्रौपदी, मंदोदरी, अहल्या, मल्लिकाएँ ये नारियाँ और आज की नारियों में क्या फर्क है, आज भी वे माँ-बाप के बन्धनों में कैद है वह स्वयं भी इससे अलग कहाँ है।" वह हर पल अपने परम्पराबद्ध आचरण के बारे में सोचती है।

'कथा सतीसर' उपन्यास की पात्र जानकी कात्यायनी पर प्राचीन संस्कार एवं अनुष्ठानों को दर्शाती हैं, और कहती हैं, "इत्ती धमक से धरती पर पाँव मत रखा करो मुन्नी, आदत हो जाएगी। आह! ऐसे ठठाकर आकाश-पाताल तोड़, ठहाके लगाती हो, कोई सुनेगा तो क्या सोचेगा? हाँ? हमने तहज़ीब नहीं सिखाई लड़की को, यही कहेगा न? और यह बात-बात पर दंदियाँ दिखाना भले घर की बेटियों को शोभा नहीं देता....।" [19]

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास की नायिका ललिता अपनी बेटी को न तो आँखों में काजल लगाने देती है और न ही बाल खुले छोड़ने देती है। वह अपनी बेटी को डाँटते हुए धमकी देती है, "यह आँख में इतना गहरा काजल क्यों आँजा है भला? चार जनों की नज़र पड़ जाये, इसलिए? ये रिबन बँधे बालों को चुन्नी से ढक नहीं सकती तुम सन्तोषी! राह चलते शोहदे चार बोल सुनायें तो अच्छा लगता है? शर्म हया सब बेच खायी हैं आज की छोकरियों ने। स्कूल-कॉलेज जाने का यही फ़ायदा हो गया! यह कसी-तनी बाडी पहनने का क्या मतलब है? राह चलतों की नज़र पड़ जाये उभरी छातियों पर? अरी बेशर्मियों! ये तो बच्चों को खिलानेवाली चीज़ें हैं, इन्हें उन्हीं के लिए ढक-ओढ़कर रखना होता है...।" [20]

राजनाथ की तीनों पत्नियाँ इन्हीं परम्परागत मूल्यों से ओत-प्रोत हैं और अपने पति को एक आदर्श पुरुष मानती हैं। चूँकि सुभद्रा की बीमारी ठीक न होने से वह अपने पति पर दूसरी शादी करने के लिए दबाव डालती है, वह अन्त तक अपने पति की भलाई की कामना करती है और चाहती है कि बच्चा पैदा करके उसे स्वर्ग में जगह मिले। गौरी ने राजनाथ की दूसरी शादी को मंजूरी दे दी और अपने पति को भगवान की तरह पूजनीय और वंदनीय मानती है। लेखिका कहती है- " हमने कहा ना कि नारी-स्वातंत्र्य का नारा गौरी तक नहीं पहुँचा था। पति की हाँ को नहीं कहने का विधान उसके संस्कारों में नहीं था, शायद उस दौर की किसी भी स्त्री के विधान में नहीं था।" [21] वह पूरी तरह से राजनाथ के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं। प्राचीन विचारों के प्रभाव में आकर स्त्रियाँ पुरुषों का आधिपत्य एवं प्रभुत्व स्वीकार कर लेती हैं। स्त्री ही स्त्री को परम्पराबद्ध बनाती है और उसी डाली पर बैठकर उसे काटने का दुस्साहस करती है।

3.2.1.1 समर्पित स्त्री

उपन्यास 'यहाँ वितस्ता बहती है' में राजनाथ की पहली पत्नी सुभद्रा एक लाइलाज बीमारी से पीड़ित हैं। वह खुद जानती है कि बचना असम्भव है, इसलिए एक समर्पित पतिपरायण पत्नी बनकर वह राजनाथ से दूसरी बार शादी करने की जिद करती है। राजनाथ द्वारा दूसरा विवाह करने पर सुभद्रा के भाई उनके खिलाफ कानूनी कारवाई करने को सोचती है, लेकिन सुभद्रा इसकी इजाज़त नहीं देती हैं और कहती हैं- "पति को वह किस कारण कठघरे में कैद कर लेती? पति ने सब कुछ दिया तो था। उसी की झोली छोटी पड़ गई थी। एक नन्हा-सा बेटा, जो कुछ ही दिनों में नाता तोड़ गया! अब यह गलती हुई देह। जीने का कौन-सा कारण बचा था जो वह पति के रास्ते में ढोक-चट्टान बनकर अड़ जाती?।"[22] सुभद्रा ने स्वेच्छा से एक समर्पित पत्नी बनकर पति की ज़िन्दगी से हट जाती है और पति की भलाई सोचती है।

इस प्रकार राजनाथ की दूसरी पत्नी गौरी भी अपने पति के प्रति समर्पित हैं। सामाजिक राज-नीति, अधिकार और कर्तव्य के कारण राजनाथ गौरी को अधिक समय और न्याय नहीं दे पाए। लेकिन गौरी अपने संस्कारों के कारण अपने पति धर्म के प्रति निष्ठावान थीं। "गौरी राजकौल को समर्पित थी। पति की इच्छा के अनुरूप जंगल की उन्मुक्त हिरणी, खिड़कियाँ, मूँद, चिकें डाल कमरे में बैठी रहती। मन में कोई मलाल न पालती, तन-मन की सँजोयी प्यास के अलावा अपने सपने, अपनी इच्छाएँ, अपना सम्पूर्ण अस्तित्व उसने अपने पति की हथेलियों पर रख दिया था। राजनाथ इस बात से अनभिज्ञ नहीं थे। ...क्योंकि वह पुरुष की प्रकृति में ही नहीं था।"[23] राजनाथ की तीसरी पत्नी भी अपनी पूर्व पत्नी गौरी के सन्तानों को बहुत प्यार से पालती हैं और उनके प्रति पूरी तरह समर्पित रहती हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी अनिरुद्ध से विवाह करती है। अनिरुद्ध को दो सन्तान सौंपकर पूर्व पत्नी चल बसी थी। कुनी उसके बिखरे हुए परिवार को सम्भालने का काम करती है। उसे लगता है- "पुरुष स्त्री को आदर दे, प्यार और विवेक से उसे उसकी

जगह दे, तो औरत भी पूरे समर्पण से उसके इर्द-गिर्द बेल-सी लिपट जाती है। मैं भी अनिरुद्ध की पत्नी बनकर उसकी अपनी हो गई।"[24] कुनी न केवल अनिरुद्ध के साथ अपना जीवन जोड़ती है, बल्कि उसके दो बच्चों को गोद लेकर उसके प्रति समर्पित भी हो जाती है।

'कथा सतीसर' उपन्यास में कुनी जैसा ही कात्यायनी का समर्पण है। उपन्यास 'अंतिम साक्ष्य' में बीजी अपने पति के अवैध सम्बन्ध को प्रत्यक्ष रूप से देखने के बावजूद रिश्ता तोड़ने के बारे में सोचती भी नहीं है और जीवन के अन्त तक अपने पति की शुभाकांक्षी ही बनी रहती है। 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में पारुल संयुक्त परिवार की ज़िम्मेदारियाँ निभाते-निभाते थक जाती है, जबकि उपन्यास 'ऐलान गली ज़िन्दा है' में रूपा अपने प्रेमी कुन्दन की मृत्यु के पश्चात लम्बे समय तक आँसू बहाकर तथा आत्म समर्पण करके दूसरा विवाह को स्वीकार नहीं कर पाती है, इसमें अपने प्रियतम के प्रति समर्पण की भावना प्रमुख रही है; और अन्त में, वह अपनी माँ की इच्छा के अनुसार विवाह के लिए सहमत हो जाती है। एक स्त्री के मन में हमेशा अपने प्रिय के प्रति भक्ति एवं समर्पण का एक उदात्त स्रोत होता है, भले ही वह अपने पति को अविश्वसनीय और धोखेबाज़ देखती हो, फिर भी वह समर्पित रहती है।

3.2.1.2 कमज़ोर स्त्री

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की बीजी एक कमज़ोर स्त्री है, मीना के साथ अपने पति के अवैध समबन्ध को देखने के बावजूद वह कमज़ोर हो गई और उसे सब कुछ सहना पड़ा। एक स्त्री और रेडियो स्टार होने के नाते मीना को बचपन से ही कई तरह के संघर्षों का सामना करना पड़ा, उनके अवैध सम्बन्ध भी रहे लेकिन उन्हें ज़िन्दगी में खुशी नहीं मिली। मानसिक और शारीरिक रूप से कमज़ोर बीजी की मृत्यु के बाद भी मीना और प्रताप के बीच दु:ख, सहानुभूति और करुणा की त्रिमूर्ति जाग उठी। दोनों के बीच एक अशुभ सन्नाटा हमेशा पसरा रहता था और आखिरकार दोनों स्त्रियों की हालत एक जैसी हो गई। 'अपने-अपने कोणार्क' की नायिका कुनी अनब्याही है और मानसिक तौर पर कमज़ोर हैं और अपनी बहन मति की शादी के बाद वह बीमार रहने लगीं। "उनींदी रातें, ज़बर्दस्त सिरदर्द! भूख लगनी बन्द हो गई

थी। ऊपर से गर्दन और पीठ में दर्द रहने लगा था, रीढ़ की हड्डी तक सरसराता तीखा दर्द। लगता, बाईं बाँह से लेकर हाथ की नसें तक सिकुड़ गई हैं।"[25]

3.2.2 आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत स्त्री

बीसवीं सदी में पुनर्जागरण काल के समाज सुधारकों ने स्त्रियों को विभिन्न बन्धनों की जंजीरों से मुक्त कराया और स्त्री स्वतंत्रता का नारा बुलन्द किया; जिससे स्त्री अपने अधिकारों एवं महत्व के प्रति जागरूक हुई। वह भी हर क्षेत्र में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्यरत होने लगीं और अपनी हीन भावना से बाहर आईं। स्त्रियों को उचित सम्मान मिला- "आधुनिक युग में नारी के सहयोग से विश्व की सृजनात्मक आस्थामूलक पुनर्रचना करने की सम्भावना ने नारी को पुरुष के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया है।"[26]

पुरुष स्त्री के महत्व को समझ चुका है। अब स्त्री ने आँसू बहाना छोड़कर अपने अस्तित्व की पहचान के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया। आधुनिक स्त्री " प्राचीन परम्पराओं का त्याग पूर्ण रूप से तो नहीं कर पाई है पर उन पुरानी सड़ी-गली परम्पराओं से स्वयं को किसी सीमा तक मुक्त अवश्य करा पाई है।"[27] चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में आधुनिक विचारों से प्रभावित स्त्री स्वत्व के विवध रूप दृष्टिगोचर होते हैं।

'बाकी सब खैरियत है' की स्वतंत्र आधुनिक विचारधारा वाली बहू निम्मी और प्राचीन मूल्यों से ओत-प्रोत सास के विचार जब टकराने लगती हैं तो वह जेठानी से साफ कह देती है, "हम अपनी सुख-सुविधा छोड़कर इनके लिए कितना कुछ तो करते थे, लेकिन माँ कभी सन्तुष्ट नहीं हुईं। भाभी! यह तुमसे कह रही हूँ। आखिर इन्हें भी समझना चाहिए कि सभी जीना चाहते हैं। इनके लिए तो अब राम का नाम लेने का वक्त आया है। जी चुके लोगों के लिए हम अपनी उगती हुई ज़िन्दगी का गला थोड़े घोंट सकते हैं।"[28]

बड़ी बहू पारुल ने बिना कुछ कहे बक्सों और अलमारियों की चाबियाँ अपनी सास को सौंप दीं, हालाँकि, छोटी बहू निम्मी चाबियाँ देने का विरोध करती है और अपने ढंग के पसन्द कपड़े भी पहनती है। निम्मी अपने पति से कहती है- "जो शख्स ज़माने से ही नाराज़

हो, वह ज़माने के साथ चलने वाले हर व्यक्ति से नाराज़ होगा। और मेरी समझ में माँ की नाराज़गी बिल्कुल नहीं आ सकती, इतना जान लो।" [29] वह किसी भी हालत में अपना अस्तित्व खोना नहीं चाहती।

इसी तरह पारुल की बेटी ऋता आधुनिक विचारों से प्रेरित होकर अपनी अलग पहचान बनाना चाहती है। वह समझौता अस्वीकार करती है; जितनी भी जीवन मिले उसे अपने सोच- विचारों के मुताबिक जीना चाहती है। ऋता ने एक बार कहा था- "चाचा-चाची बहुत अच्छे हैं, मगर 'वाई डोंट दे लीव अस अलोन'। हमारे हर काम पर उनके दस्तखत क्यों ज़रूरी हैं? " [30]

'ऐलान गली ज़िन्दा है' की रत्नी चाची एक विधवा स्त्री हैं जो परम्परागत विचारों के अधीन परिवेश में रहने के बावजूद नए मूल्यों के अधुनातन विचारों से प्रभावित हैं। वह अपने पति और परिवारवालों की मृत्यु के हादसे से न टूटकर पुनर्विवाह करती है। अपनी बेटी रूपा को शिक्षा प्रदान कर वे दोनों अपना स्वत्व को खोए बिना एक सफल ज़िन्दगी जी रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास का स्त्री पात्र दिव्या एक शिक्षित और ज़िम्मेदार स्त्री होने के नाते गाइड का काम बड़ी निर्भीकता से निभाती है और अपने परिवार के दायित्वों को पूरा कर देती है। अवतारे की दूसरी ही मुलाकात में गाइड दिव्या उसे अपने साथ घूमने के लिए आमन्त्रित करती है और कहती है- "मंजू भाभी, आप इन्हें अपने साथ ले आइए न? लगता है, मेरे साथ चलने में इन्हें संकोच हो रहा है। ....मुझे देखो मंजू भाभी, लड़की होकर भी मुझे किसी तरह का संकोच नहीं होता। अकेली ही कहाँ-कहाँ तो घूमना पड़ता है। दरअसल, गाइड का काम करते तो मैं पक्की प्रोफेशनल हो गई हूँ....।" [31] वह अवतारे से अपने प्यार का इज़हार करते हुए साहसपूर्वक अपने पूर्व प्रेम विघटन के बारे में निर्भीकता से बताती है। इतना ही नहीं, वह अवतारे के गले में बाहें डालकर शारीरिक सम्बन्धों को भी सहज-स्वाभाविक तरीके से स्वीकार करती है। इसी तरह पात्र शुभी और सलमे सामाजिक विरोध को स्वीकार कर अंतर्रधर्मीय विवाह कर लेते हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कावेरी नौकरी पेशा स्त्री है, वह राँची कॉलेज में लेक्चरर है। छुट्टियों के दौरान वह अपने पति का पूरा समय अपने लिए चाहती हैं, तो उन्हें ससुराल में कोई 'प्राइवसी' महसूस नहीं होती। "कमोबेश खुली हवा में पली-बढ़ी! छुट्टियों में पति के पास रहने आती, तो ज़ाहिर है पति का पूरा समय अपने लिए चाहती। कितना कम वक्त था उनके पास, अपनी बातें कहने-सुनने के लिए। उस पर भरे घर में एकान्त नहीं मिल पाता था। दिन को तो कतई नहीं। कावेरी को शिकायत थीं। पता नहीं किनसे! बप्पा से? ....घर में बुज़ुर्गों का मेला जुटा रहता था। कोई प्राइवसी नहीं। घर है या सराय?" [32] पति द्वारा बाहर घुमाने को न ले जाने पर क्रोधित होकर वह कहती है- "मैंने इनसे शादी की है। कोई भागकर तो नहीं आई हूँ। मेरी भी कोई मान-मर्यादा है, कोई इच्छा है। मुझे तैयार होने को कह गए और आप बिना बताए पता नहीं कहाँ चल दिए। क्या यही यहाँ का तौर-तरीका है?" [33] वह अपने अधिकारों और अस्तित्व बोध में समझौता अस्वीकार करती है।

'कथा सतीसर' की कात्यायनी भी इसी विचारधारा से प्रेरित है। वह पढ़-लिखकर डॉक्टर बन जाती है, परन्तु उसका लक्ष्य विवाह या धन प्राप्ति न होकर सेवा में नियत रहना होता है और वह स्त्रियों के उद्धार के लिए निरन्तर सक्रिय रहती है। उपन्यास की राज़ा भी अपने ससुराल वालों के अत्याचारों और पीड़ाओं के खिलाफ विद्रोह करके अपने पति को छोड़कर बेटी के साथ स्वतंत्र रहने का निश्चय एवं फैसला करती है।

आधुनिक विचारों से युक्त स्त्रियों में अस्तित्व और अस्मिता का बोध की भावना पायी जाती है। वह अपने अधिकारों और कर्तव्य बोध के साथ समाज में खड़े होने लगी है। उनमें सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता होती है, इसलिए आज वे अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण का सामना करने के प्रति जागरूक हैं। इतना ही नहीं, वह अन्य स्त्रियों को भी अन्याय से मुक्ति दिलाने का प्रयास करती हैं।

3.2.2.1 डेटिंग एवं लिविंग टुगेथेर में विश्वास करने वाली स्त्री

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की मिस सिँह और बीजी का बेटा विकी दोनों का मुलाकात दिल्ली में होते हैं और जल्द ही वे दोस्त बन जाते हैं। मिलते-मिलते दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं और बाद में 'डेटिंग' करने लगते हैं। विकी की ही बराबर उम्र की मिस सिँह बड़ी सुलझी, आदर्शवादी, समझदार और बुद्धिमान लड़की थी। 'डेटिंग' करते-करते ये दोनों इतने निकट आ जाते हैं कि कई लोग उन्हें देखते ही घूरते हुए जाते हैं। दोनों ने अपनी-अपनी कहानी सुनाकर साथ रहने का फैसला किया।

'बाकी सब खैरियत है' की नायिका पारुल की बेटी ऋता अपने अन्य फ्रेंड्स की तरह 'डेटिंग' करना चाहती है। वह यह कहकर पारुल और अनुपम से फ्रेंड्स बनाने की अनुमति माँगने लगा- "'आय एम ए बिग गर्ल पा!' अपनी बात की पुष्टि के लिए वह अपनी सहेलियों- एलिस, एन, जीन वगैरह के उदाहरण देकर अनजान पापा के ज्ञान की वृद्धि कर देती है कि उन लड़कियों के कई बॉय फ्रेंड्स हैं। वे उनके साथ 'डेट' के लिए जाती हैं। एक वही बुद्धू है, जो अभी भी लड़कियों के साथ ही चिपकी रहती है।" [34]

3.2.2.2 आत्मनिर्भर स्त्री

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रचार-प्रसार में प्रगति होने लगी और स्त्रियाँ घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर स्वतंत्र रूप से काम करना आरम्भ किया। अपने लिए विस्तृत एवं व्यापक कार्यक्षेत्र बनाने तथा स्वयं के संसाधन जुटाने के साथ-साथ उन्होंने स्वयं यह पहचान लिया कि स्वावलम्बन अथवा आत्मनिर्भरता के लिए आर्थिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है, "आर्थिक स्वावलम्बन के अभाव में उसे हर हालत में पुरुष की अधीनता स्वीकार करनी पड़ती है। इसलिए दासता की बेड़ियों से मुक्ति पाने का सबसे उत्तम तथा बड़ा साधन है आर्थिक स्वतंत्रता।"[35] इसलिए आत्मनिर्भरता के विभिन्न मार्ग स्त्रियों को ढूँढना पड़ता है।

3.2.2.3 शिक्षा द्वारा परिवर्तित स्त्री

'अर्थान्तर' उपन्यास की कम्मो एक शिक्षित युवती है और जब उसे मानसिक और शारीरिक रूप से अपने पति की उपेक्षा भाव महसूस हुई तो उसने आत्मनिर्भर बनने और स्वतंत्र रूप से नौकरी करने का निर्णय ले लेती है। क्योंकि वह एक स्वतंत्र अस्तित्व इसलिए तलाशती है कि वह सिर्फ एक घरेलू पत्नी बनकर परिवार में सभी की आवश्यकताओं अथवा ज़रूरतों को निभानेवाली एक 'मशीन' बनने के लिए तैयार नहीं थी, और वह अपने स्वत्व को खोए बिना रहना चाहती थी। नौकरी की तलाश में वह दूसरे शहर जाकर अकेली रहने को भी तैयार हो जाती है, लेकिन उसके सास-ससुर, माँ-बाबू सभी इस निर्णय का विरोध करते हैं, लेकिन कम्मो अपने फैसले के प्रति अटल रहती है- "विजय की माँ ने बाधा दी, अम्मा-बाबू जी ने विरोध किया, पर कम्मो एक बार फिर ज़िद पर आ गई। पराश्रित रहकर कम्मो जीना न चाहेगी। माँ ने दलीलें दीं, सासजी ने लक्ष्मण-रेखाओं की ओर संकेत किया। कम्मो फिर भी न झुकी। कम-से-कम विजय के सेटल होने तक के लिए उसने इजाज़त ले ही ली।" [36] वह अध्यापिका की नौकरी कर अपने स्वत्व को बनाए रखने की कोशिश करती है।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास के सभी स्त्री पात्र आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती हुई दिखाई देती है। कुनी और कावेरी कालेज में 'लेक्चरर' हैं और मति बी.कॉम. के पश्चात बाँक में नौकरी करती हैं और उनकी छोटी बहनें भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनने का प्रयास कर आगे बढ़ती हैं। 'कथा सतीसर' उपन्यास की कात्यायनी उच्च शिक्षा प्राप्त कर 'डॉक्टेर' बन जाती है और साथ ही अपनी सहेली तुलसी को भी शिक्षा प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करती है। इसके अलावा उपन्यास में 'लेक्चरर' राज़ा, बैंक क्लर्क अरनी की बहू आदि आत्मनिर्भर स्त्रियाँ शामिल हैं।

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास के पात्र विभा समाज से परित्यक्ता बनने पर घर में कैद होकर नहीं बैठना चाहती, बल्कि वह आत्मनिर्भर बनकर स्वतंत्र रूप से अपना ज़िन्दगी जीती है। एक स्त्री की पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक आदि पारम्परिक बन्धनों एवं बाधाओं से

मुक्ति और अस्तित्व की तलाश तभी पूरी होती है जब वह आत्मनिर्भर बन जाती है। आत्मनिर्भरता के आधार पर ही वह अधिकार प्राप्त कर सकती है।

3.2.2.4 स्वाभिमानी स्त्री

आधुनिक युग में स्त्रियों की पारम्परिक सोच विचार में प्रगतिशील परिवर्तन आ रहा है। आज स्त्रियाँ अपने पति के प्रति समर्पण के प्राचीन मूल्यों का पालन करने और अपने पतियों के सामने सिर्फ मौन और सिर झुकाकर जीवन जीने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। उसे अपनी अस्मिता एवं स्वत्व को पहचानना होगा और अस्तित्व व अस्मिता की तलाश में जागृत होकर एक सतर्क, सजग व सटीक इन्सान बनना होगा और साथ ही पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ जीना होगा।

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की अरुन्धती एक स्वाभिमान स्त्री हैं। जब सवाल उपस्थित होता है कि अरुन्धती के बेटों में बँटवारा होने की स्थिति में माँ-बाप किसके पास रहें, तो बेटे सुझाव रखते हैं कि माँ-बाप छह-छह महीने दोनों के पास रहे या माँ एक के पास पिताजी एक के पास रहें। स्वाभिमानी अरुन्धती अपने पुत्रों के इस व्यवहार पर कहती हैं- "नहीं, कोई ज़रूरत नहीं। जब तक हाथ-पैर चलेंगे, खुद ही पका लूँगी और तुम्हारे बाबू को भी खिलाऊँगी। ज़िन्दा रहते हमारा बँटवारा नहीं होगा। एक के जाने पर दूसरा तो पीछे रहेगा ही, उसके भाग्य में जो बदा होगा, होकर रहेगा।" [37] वृद्धावस्था में भी पति-पत्नी इस बँटवारे को स्वीकार नहीं करते बल्कि जीवन भर स्वाभिमान के साथ जीने का फैसला करते हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी जब अपने विवाह के लिए दहेज सम्बन्धी चर्चा के दौरान अपने पिता को लड़केवालों के सामने गिड़गिड़ाते हुए देखती है तो उसके स्वाभिमान पर चोट पहुँचती है। वह लड़केवालों के इस रवैये का पुरजोर विरोध करती है और कहती है, "न बोउ, मैं यह शादी नहीं करूँगी।" [38] वह अपने पिता को उसकी विवाह केलिए लड़केवालों के सामने झुकते हुए नहीं देख पाती।

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की बीजी का अपने पति के वैवाहिक अवैध सम्बन्ध को देखकर खुद की आत्माभिमान को ठेस पहुँचती है और वह आजीवन पति से अनबन होकर अलग रहती है। वह किसी भी हालत में अपने व्यभिचारी पति के साथ मेल खाने के लिए और अपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान का त्याग करने के लिए तैयार नहीं थी।

3.2.2.5 ज़िम्मेदार स्त्री

पुरुष प्रधान भारतीय संस्कृति में यह एक समीकरण बन चुका था कि घर के बाहर की सारी गतिविधियाँ पुरुष करें और स्त्री घर पर बैठकर सबकी सेवा करे, खाना पकाए, पुरुष का मनोरंजन करे, बच्चे पैदा कर उनका पालन पोषण में व्यस्त रहे। अर्थात समाज से नाता तोड़कर चार दीवारी में कैद स्वत्वहीन होकर केवल परिवार की सेवा में ध्यान रखें। लेकिन आधुनिक युग की प्रगतिशील विचारधारा से प्रभावित स्त्री की सोच विचार में बदलाव आ चुका है। वह शिक्षा से आत्मनिर्भर बनकर पुरुषों की तरह जीना चाहती है और आज वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों के पीछे नहीं है और स्वाभिमान के साथ अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभा रही हैं। चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में भी इसी प्रकार के अनेक स्त्री पात्रों का ज़िक्र किया गया है।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की नायिका कुनी परिवार की बड़ी बेटी और लगभग घर के मुखिया की तरह है। एम. ए और पी. एच. डी. करने के बाद वह 'लेक्चरर' बन गई हैं और प्रति माह तीन हज़ार रुपये वेतन पाती है। कुनी एक ज़िम्मेदार स्त्री इसलिए बन गई कि वह शिक्षित है। वह अपने परिवार के सभी सदस्यों की शिक्षा, नौकरी, विवाह आदि के सम्बन्ध में निर्णय लेती है। बहन मति के बारे में माँ और भाई को दिये गये कुछ संवाद इस बात का द्योतक हैं- "ठीक है बोऊ! तुम चिन्ता मत करो। ....अब मैं जो हूँ। तुम्हें चिन्ता करने की क्या ज़रूरत? ...." आफ़िस जाने से पहले मति को बैंक छोड़ दिया करो। लौटते वक्त साथ ले आना। तुम्हारे दफ़्तर से ज़्यादा दूर भी नहीं है। रिक्शे में देर हो जाती है।"[39] उसका हर फैसला परिवार के सभी सदस्यों का आखिरी फैसला बन जाता है।

कुनी एक ऐसी स्त्री है जो अपनी निजी भावनाओं, अनुभूतियों, इच्छाओं और आकांक्षाओं को एक तरफ रखकर निस्वार्थ भाव से अपना पूरा जीवन परिवार के लिए बिताती है और अपनी उत्तरदायित्वों को निभाती है। एक आदर्शवादी और आर्थिक रूप से स्वतंत्र स्त्री होने के नाते उन्होंने परिवारिक मूल्यों को महत्व देकर आमदनी का उपयोग अपने छोटे भाइयों और बहनों की शादी के लिए किया। कुनी अपने दो छोटे भाइयों के लिए लड़कियाँ ढूँढती है और ऊपरी मंज़िल पर उन दोनों के लिए कमरे बनवाती है। घर की इन सभी बातों पर उसका इतना स्थान एवं नियंत्रण होता है कि हर काम उससे पूछकर ही तय कर लेती है और घर की चाबियों का गुच्छा उसकी कमर पर हमेशा लटकने लगती है।

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास के पात्र राजनाथ की बेटियाँ रति और रिचा का विवाह सोलहवाँ साल पूरा होने से पहले ही हो गई थी। हालाँकि वह लड़कियों की उच्च शिक्षा के हिमायती थे, परन्तु विवश अर्थात असहाय थे। सबसे छोटी बेटी मिन्नी कच्ची उम्र में संवेदनशील और ज़िम्मेदार बन गई है। वह स्नेह, ममता, नमी एवं आर्द्रता से भरी हुई है और जब भी वह अपने पिता बहनों के ससुराल जाती है, तो अपने पिता की सुख सुविधा का पूरा खायाल रखती है और पिता के कपड़े खुद इस्त्री कर देती है और उन्हें व्यवस्थित तरीके से हैंगर पर टाँग देती है।

3.2.2.6 विद्रोही स्त्री

'कथा सतीसर' उपन्यास के स्त्री पात्र राज़ा को उसका पति सिर्फ एक भोग्य वस्तु समझकर एक खूंखार जानवर की तरह उसका शारीरिक बलात्कार करता है। अपनी असफल दाम्पत्य जीवन से त्रस्त एवं परेशान राज़ा जब अपने मायके चली जाती है तो उसके ससुरालवाले उसे वापस बुला लेते हैं। एक बेटी की माँ होने पर भी वह वापस जाने को तैयार नहीं होती है, वरना वह विद्रोही हो जाती है और अपने निर्णय पर अटल होकर कहती है- "एक-दो बार मेरे घर लौटने के सन्देश भी भेज दिए, पर मुझे लौटना नहीं था। मैंने तलाक के कागज़ों पर दस्तखत कर दिए।"[40]

'अपने-अपने कोणार्क' की कुनी एक साहसी स्त्री हैं और शादी में दहेज माँगने वालों को वह हमेशा साफ मना कर देती हैं। जब इलाज करनेवाला डॉक्टर उसका शारीरिक शोषण करने की कोशिश करता है, तो वह साहसपूर्वक-निर्भीक होकर उसका विरोध एवं विद्रोह करती है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में कालेज का छात्र विजय 'लबोरटेरी' में एक्सपेरिमेंट करते समय सहपाठी लड़की कौशल्या को चिढ़ाती है तो कौशल्या चुप नहीं रहती, "वह तो नागिन बन गई। खींचकर एक झापड़ मारा बेचारे को कि गाल पर अँगुलियों के निशान पड़ गये लड़के के। आसपास पूरा क्लास इकट्ठा हो गया...।" [41] वह शरीर से दुर्बल समझकर अत्याचार सहती दिखाई नहीं देती है।

3.2.3 पारिवारिक स्नेह-सौहार्द को पसन्द करने वाली स्त्री

परिवार के सदस्यों को अच्छे संस्कार एवं सभ्यता प्रदान करना बड़ों का दायित्व होता है। परिवार के पालन-पोषण करने और परिवार को सुव्यवस्थित रखने में वरिष्ठ सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास के माध्यम से चन्द्रकान्ता ने एक समृद्ध एवं सुखी संयुक्त परिवार के सदस्यों के बीच का आपस में मेल, सौहार्द, सामंजस्य एवं समरसता पर प्रकाश डाला है। एक शिक्षित और कामकाजी स्त्री होने के नाते, कुनी पारिवारिक स्नेह-सौहार्द एवं सद्भाव से भरपूर सम्पन्न है। वह अपने संयुक्त परिवार के पालन-पोषण और ज़रूरतों का ईमानदारी एवं व्यवस्थित ढंग से ख्याल रख रही है। परिवार को खुश रखने में दादी माँ की भी अहम भूमिका रही है। कुनी के शब्दों में, "दया-माया भी कम नहीं है दादी के मन में। डाँटेंगी, फटकारेगी पर भरपेट भात भी खिलाएंगी। दादी अन्नपूर्णा हैं, दादी गृहस्वामिनी हैं, बूढ़ी बाघिन भी।" [42]

दादी माँ का आदर सिर्फ परिवार में ही नहीं बल्कि विरादरी में भी होता था। क्योंकि वे एक सुसंस्कृत, सुशिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवार की धुरी थी। उन्होंने सदैव परिवार को प्रेम से परिपूर्ण सम्पन्न रखने में ध्यान दिया। चन्द्रकान्ता कहती है- "सनातन मिश्र की माँ थी वह। एक रक्षणशील परिवार की स्वामिनी। जहाँ लक्ष्मी और सरस्वती का

वास है। क्योंकि दादी माँ घर-भर को अनुशासन में रखना जानती हैं, धार्मिक महिला है। कितने परिवार हैं ऐसे श्रद्धा और विश्वासवाले देश-समाज में? तीज-त्यौहार, भजन-पूजन का नियम ही नहीं, दूसरे के सुख-दुख में भी आगे। सतयुगी महिला हैं।" [43]

3.2.4 असफल दाम्पत्य जीवन बितानेवाले स्त्री

'कथा सतीसर' उपन्यास के पात्र विमल और राज़ा का वैवाहिक दाम्पत्य जीवन असफल है। विमल ने अपनी पत्नी राज़ा को सिर्फ एक भोग्य वस्तु समझ रखा है। पत्नी की इच्छा-अनिच्छा एवं सहमति के बिना वह उससे शारीरिक सम्बन्ध बनाता है और उसके साथ बलात्कार करता है। विमल राज़ा को केवल शारीसिक सुख की एक वस्तु समझता था।

3.2.5 विवाहपूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों में फँसी स्त्री

विवाह महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यों की प्राप्ति है। चन्द्रकान्ता ने उपन्यासों के ज़रिए विवाह पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्धों में फँसी स्त्रियों की अनैतिक सम्बन्धों के दुष्परिणामों का यथार्थ अंकन किया है। उनके अनुसार प्रेम एक भावना है, जिसमें सहजता होती है। विवाह पूर्व प्रेम का निरूपण करते हुए लेखिका ने यह स्पष्ट किया है कि किशोरावस्था में भावनात्मक रूप से किया गया प्रेम अन्त तक टिकता नहीं है और किसी एक का विवाह होने पर प्रेम की वहीं समाप्ति हो जाती है।

'बाकी सब खैरियत है' की ऋता और साउथ एक्स की सीता लड़कियों के इस तरह के प्रदर्शन का विरोध करती हैं और 'अपने-अपने कोणार्क' की नायिका कुनी की भी यही विचार है। लेखिका ने अनुसार विवाह पूर्व यौन सम्बन्धों के परिणाम बुरे होते है, जो विवाहेतर पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव का एक मुख्य कारण बन जाता है। 'अर्थान्तर' उपन्यास की कम्मो विवाह के दिन ही उषी और उसके पति विजय के अवैध सम्बन्धों की गवाह बन जाती है- "खेतों में, घास के गट्ठरों और धान की ढेरियों की आड़, पकी फसल की जवान गन्ध में घुली महीन आवाज़ें मान-मनौवल और मनुहारें गूँजती हैं।" [44]

आज के प्रेम सम्बन्धों के मूल में स्वच्छंदतावादी भावनाएँ दृष्टिगत होती है। विवाह के पश्चात जब कम्मो के पति विजय की फाइलें साफ करते हुए उसे एक फोटो पैकेट मिलता

है, जिसमें जूली के साथ विजय की ढेर-सी पुरानी स्मृतियाँ सुरक्षित थीं। "आत्मीयता से भरे पत्र, नज़दीकी का अहसास दिलाते चित्र कुछ वैसे ही 'पोज़ों' में जैसे विजय ने पिछले दिनों कम्मो के साथ खिंचाए थे।" जब उसने इस सम्बन्ध पर विजय से पूच्छा तो विजय ने समझदार लहजे में उत्तर दिया था कि "वह सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष का इट्टा-कट्टा जवान इस उम्र में लड़कियों को पत्र न लिखता तो क्या प्रेम-कविताएँ रचता? दूसरा तमाचा कम्मो को ज़्यादा पीड़ा दे गया था। वह चाहता तो कम्मो से तलाक लेकर जूली से विवाह करता, पर उसने ऐसा नहीं किया। क्या यह कम्मो पर कम अहसान था? खासकर तब, जब कम्मो भी साल भर अकेली रही थी।" [45]

यहाँ लेखिका ने वैवाहिक दाम्पत्य जीवन की त्रासदियों की ओर संकेत किया गया है। तीसरे का आगमन अवश्य ही निश्चित रूप से पति-पत्नी के रिश्ते को तनावपूर्ण बना देता है। कम्मो और विजय के बीच यह मानसिक स्थिति विवाह पूर्व प्रेम या यौन सम्बन्धों के कारण उत्पन्न हुई है।

'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास में प्रेम की विभिन्न स्थितियों और परिणतियों पर प्रकाश डाला गया है। प्यार में असफलता के कई कारण होते हैं, प्रस्तुत उपन्यास के पात्र अनुपम और सीमा एक दूसरे के प्रति आकर्षित हैं और दोनों डॉकटेर्स भी हैं। फिर भी सीमा की शादी एक सम्पन्न घर परिवार में हो जाती है। अनु अपना दर्द अपनी भाभी से इन शब्दों में व्यक्त करता है- "जाने दो भाभी! वह सब शायद एकतरफ़ा ही था। सीमा तो सभी के साथ खुलकर बोलने वाली लड़की थी। मैं ही गलत समझ गया। उसने शादी की बात सुनकर साफ कह दिया कि इसका फैसला उसके पिता ही करेंगे और पिताजी गुजराती ब्राह्मण को ज़्यादा पसन्द करते
थे।" [46]

सीमा एक पढ़ी-लिखी, कामकाजी और सुरक्षित स्त्री होने के बावजूद भी खुद फैसले लेने की हिम्मत नहीं जुटा पाती थी। अपनी पारिवारिक परम्पराओं और मूल्यों का पालन करने के लिए उन्हें अनु से शादी करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, इसलिए

उन्होंने यह रिश्ता छोड़ दिया। उनके प्यार का आलम कुछ यूँ रहा- “किसी आत्मीय क्षण में दोनों के भीतर उष्णता की लहरें उठी थीं-लेकिन काठ-कंक्रीट के तटों को छूकर बिखरने की नियति लेकर। किसी अवरोध को तोड़ने की शक्ति उनमें न थी। बस, किनारों की रेत-मिट्टी गीली करके वे अपने में सिमट गईं थी। अनु ने शायद तभी से सपने देखने शुरू किए थे। सीमा ने भी तो भरपूर साथ दिया था।”[47]

‘अपने-अपने कोणार्क’ की कुनी की बहन मति एक शिक्षित, कामकाजी और खूबसूरत स्त्री हैं और इसी खूबसूरती के जाल में हेमंत दास फँस गया। उसने मति को स्कूटर पर घुमाता रहा और बाद में पता चला कि वह शादीशुदा है। छोटी बहन प्रीति भी किसी लड़के के चक्कर में फँस गई है तो बप्पा को समझा-बुझाकर कुनी उनकी शादी उससे करवा देती है।

3.2.6 विवाहेतर प्रेम में फँसी स्त्री

‘अंतिम साक्ष्य’ के बीजी के पति प्रताप सिँह और मीना दोनों के बीच विवाहेतर शारीरिक अवैध सम्बन्ध हैं। सरकारी नौकरी, खुद का मकान, दो बच्चों का पिता होने और घरेलू पत्नी द्वारा घर-गृहस्थी की सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने के बावजूद प्रताप सिँह के भीतर कोई एक कोना खाली था, जो मीना मौसी के सम्पर्क में आते ही फोड़े की तरह दुखने लगा था।

3.2.7 किशोरावस्था में किए प्रेम में फँसी स्त्री

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में विवाह की प्रासंगिकता, सफल-विफल प्रेम समबन्ध, असफल प्रेम में फँसी स्त्री की समस्याएँ, शारीरिक आकर्षण को प्रेम मानने से रिश्ते निभाने में उत्पन्न समस्याएँ आदि पर विचार-विमर्श की गई है।

‘अंतिम साक्ष्य’ उपन्यास के सुरेश और सरोज दोनों पड़ोसी होने के नाते एक-दूसरे को चाहते हैं। सुरेश की माँ एक सतर्क जासूस की तरह काम करते हुए उनके प्रेम-सम्बन्ध को पकड़ लेती है। वह अपने बच्चा को सताने से पहले सरोज को दोषी ठहराती है- “ये आजकल की छोकरियाँ। वे कान पकड़कर तौबा करती- “मुँह अन्धेरे सरोज छत पर निकल सुरेश के

कमरे में ताक-झाँक करती है। बुड्ढा बाप बीच छत में सोया पड़ा रहता है। ठीक उसकी नाक के नीचे बेटी खुलेआम मुंडेर लाँघ जाती है। कभी नहाकर घण्टों बाहें उठा-उठाकर बाल झटका करेगी।"[48] इस घटना से दोनों के बीच प्रेममय सम्बन्ध ख़त्म हो जाता है; वैसे भी, किशोरावस्था में किया गया प्यार टिकने की सम्भावना कम ही होती है।

प्रस्तुत उपन्यास के सुरेश का भाई विकी और गुप्ता साहब की मासूम-सी गहरी काली आँखों वाली लड़की तनु कॉलेज आते-जाते समय मिला करते थे। वे दोनों एक दूसरे से इतना प्यार करते हैं परन्तु उनका प्यार सफल नहीं हो सका। विकी के इस निराशाभरित या अवसादग्रस्त स्थिति में उसकी सहेली नीला ने उसे मानसिक शक्ति प्रदान किया। एक लड़की होने के नाते, नीला विकी के करीब बैठती थी, कभी 'रेस्टरंट' में काफी पीते कभी-कभी डिनर लेते पास बैठकर एक-दूसरे को अपने करीब महसूस करते थे। उन दोनों के बीच की आत्मीयता या घनिष्ठता के सम्बन्ध में लेखिका का कथन- "आश्चर्य! दो व्यक्ति नितान्त भिन्न होने के भावजूद किसी बिन्दु पर एक होकर ऐसे घुल जाते हैं, ज्यों नमक-पानी एक हो जाते हैं। चाहत का दुर्निवार आग्रह जिसे पाने को व्यक्ति का भीतर-बाहर ललकता है और आदमी लाख चिन्ताओं, परेशानियों और व्यस्तताओं के बावजूद अपने लिए किसी के भीतर एक सुरक्षित कोना ढूँढ लेता है।" [49]

विकी कहता है- "इस कच्ची उम्र का प्रेम तन से ज्यादा मन का कलाप होता है। बिना वजह आहें-कराहें भरने की उम्र। भाग-भागकर प्रिय को नज़र-भर देखने की बेताब ऊम्र और उसके दो बोल सुनने के लिए कई-कई घण्टे प्रतीक्षा में बर्बाद करने की उम्र।" [50]

3.2.8 अनमेल विवाह से त्रस्त स्त्री

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना की दुखद घटना अथवा त्रासदीपूर्ण प्रसंग के माध्यम से अनमेल विवाह के दुष्परिणामों का यथार्थ चित्रण किया गया है। बचपन में ही माता-पिता का निधन हो जाने के कारण वह अपने चाचा-चाची के साथ रहने लगीं। उन्होंने इस बारह वर्षीय अनाथ मीना की शादी एक पचास वर्षीय बूढ़े से कर दी। दुखद बचपन में फँसी मीना की ज़िन्दगी अनमेल विवाह के बाद भी त्रासदीपूर्ण और संघर्ष से भरा रहा। मीना का दूसरा

विवाह जगन नाम के एक गुण्डा के साथ हुआ, जिसने उसके साथ मौज-मस्ती की और बाद में मीना को दूसरों को बेच दिया। यहाँ मीना चाची को एक अस्तित्वहीन महिला के रूप में चित्रित किया गया है।

'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास के राजनाथ की दो बेटियाँ रति और रिचा की शादी सोलह साल की होने से पहले ही हो गई थी। हालाँकि वह लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा के समर्थक थे, लेकिन असहाय थे। उन्हीं के शब्दों में- "बेटियों की माँ होती तो अभी इनके विवाह की बात मैं सोचता भी नहीं। अभी इनके पढ़ने-लिखने और कुछ सीखने-बनने की उम्र है, पर हालात से थोड़ा मज़बूर हूँ। हर पिता की तरह बेटियों को अपने घरों में रचा-बसा देखना चाहता हूँ...।" [51] बिना माँ के बेटियाँ कम उम्र में ही जल्द वयस्क हो जाती हैं।

'कथा सतीसर' उपन्यास में तुलसी के बेमेल विवाह का एक कारण उनके भाई की आर्थिक तंगी और मजबूरी थी और दूसरा कारण तुलसी का अपने भाई के विवाह के लिए त्याग करना था। तुलसी खुद इसके बारे में कात्या को अपनी दुखभरी व्यथा-कथा सुनाती हैं कि वह इस विवाह से कैसे खुश रह सकती हैं- " मैं क्या खुश होऊँगी कात्या। वह बुड्ढा है। पहली बीवी मर गई है, उससे दो बच्चे हैं। बड़ा वाला तो मेरी उम्र का होगा।" "ओ माँ! काकनी को यह सब मालूम नहीं?" "स....ब मालूम है बहनी। पर वह क्या कर सकती है? अभी तो वे बिना 'ह्चोत-द्योत' मुझे माँग रहे हैं। इन्हें नकार दें तो दूसरे लड़केवाले छरा छाँट लड़की थोड़ी ले लेंगे। कई बातें हैं कात्या, तुम नहीं समझोगी। हम बहुत गरीब हैं न? " [52]

निम्न मध्यवर्ग की मानसिकता यह होती है कि दूल्हे की उम्र अधिक होने पर भी गरीब लड़की को एक समृद्ध-सम्पन्न परिवार मिल रहा है, यह क्या कम है- "सभी प्रश्नों का उत्तर कि, हाँ कर दो। बुड्ढा है तो क्या हुआ? लड़के की उम्र थोड़ी देखी जाती है। गाँव का सरपंच है, अपनी ज़मीन-ज़िरात, गाय-भैंस, धान के भरे कुठार। क्या नहीं है उसके पास? लड़की राज करेगी। अपनों-सगों ने समझाया। मर्द तो साठे पर पाठा।" [53]

3.2.9 शोषण के शिकार बनी स्त्री

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास के कुनी जब अपनी बहन मति की शादी के बाद मानसिक द्वन्द्व से पीड़ित होकर इलाज के लिए डॉक्टर त्रिपाठी के पास जाती है। उसका इलाज करते समय 'डॉक्टर' को लगा कि इस औरत में एक जबर्दस्त प्यास है। जैसे ही वह उसे व्यायाम सिखाने के बहाने खरोंचने की कोशिश करता है, पर वह उसके हाथों पर अपने निशान छोड़कर भाग जाती है। उपन्यास में नारी-शोषण के विभिन्न कारणों पर भी परामर्श किया गया है। 'यहाँ वितस्ता बहती है' उपन्यास में शिवा का गरीब और अपंग होने का फायदा उठाकर एक असहाय लड़की को खरीदकर उसे अपने भाई की पत्नी के रूप में रहने के लिए मजबूर करना आदि प्रसंग एवं घटनाएँ नारी शोषण की भयावहता को स्पष्ट करती हैं।

3.2.10 अकेलापन से तनावग्रस्त एवं संघर्षभरित उदासीन स्त्री

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास के बीजी अपने पति के अवैध सम्बन्धों को जानते हुए एक प्रकार से तनावग्रस्त, उदासीन संघर्षभरित रह गयी थी। 'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास के पारुल की ज़िन्दगी भी अपने सास-ससुर और देवर के कारण तनावग्रस्तपूर्ण ही है। पारुल जैसी हज़ारों स्त्रियाँ हैं जो अन्त तक अपने मन से जी नहीं सकतीं। 'अर्थान्तर' उपन्यास के कम्मो की भी यही स्थिति उपस्थित होती है।

3.2.11 वृद्धावस्था में स्त्री

'बाकी सब खैरियत है' के बेटा अनु जब अपने माता-पिता को पहली बार विदेश ले जाता है तो आरम्भ में तो वे वहाँ की चकाचौंध और वैभव को देखकर अति प्रसन्न एवं खुश होते हैं, परन्तु 'जनरेशन गैप' के कारण उन्हें कुछ दिनों में भी अपनी जबान और बर्ताव से उनका दिल तोड़ देते हैं। निम्मी का मानना है- "जी चुके लोगों के लिए हम अपनी अगती हुई ज़िन्दगी का गला थोड़े घोंट सकते हैं?" [54]

अपनी बहू निम्मी का बाल काटने से उस पर बार-बार बड़बड़ाना, अलमारियों की चाभियाँ माँगना, 'पैडिड ब्रा' को छूकर पूछताछ करना, ससुर से बात करने पर शक करना

आदि निम्मी को बिल्कुल पसन्द नहीं था। "निम्मी को अफ़सोस था कि बदले ज़माने पर माँ हमेशा कुढ़ती-खीजती रहती हैं। उन्हें देखकर या उनके पीछे उनकी बात सोचकर निम्मी को हमेशा गुज़रे ज़माने का कोई नायाब नमूना-अकबरी लोटा या नूरजहाँ का दुशाला-याद आता, जिसे एंटीको में शुमार करके घर में सजाया जा सकता, बशर्ते वह अपना मुँह बंद रखतीं।" [55] उसके साथ जिया नहीं सकता। माँ जी के पोर-पोर में अन्धविश्वास भरा हुआ था और सुनाने के लिए जमाने भर की पुरानी कहानियाँ विदेश में उन्हें सुनने के लिए कौन मिलता?

3.2.12 पके उम्र में अनब्याही स्त्री

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी केवल इसलिए अनब्याही रही गई कि परिवार का पूरा दायित्व उसकी कन्धों पर थी और सभी भाई-बहनों की शादियाँ तय की गई थीं। आखिर आकर उसके सामने चारों तरफ संजीदगी छा गयी, मानो खोया उसके हिस्से का सौभाग्य छीनकर मति को दे दिया गया हो। "नाते-रिश्तेदारों के दूरगामी सोच में मेरे लिए वर न मिलने के दुर्भाग्य से लेकर छोटी बहन को ससुराल जाते देख दिल टूटने-जैसी मेरी सम्भावित यातना शामिल थी। आह! छोटी गई पर बड़ी बैठी है घर में! च-च, बेचारी! सोना-जैसी झिओ, भाग में वर नहीं, सही कहा है- 'धृतराष्ट्र कु कन्या नांहि, गांधारी कु वर नांहि'... " [56]

3.2.13 आतंकवाद से त्रस्त स्त्री

'कथा सतीसर' उपन्यास में आतंकवाद की भयानकता और उसके परिणामों का चित्रण हुआ है। यहाँ कट्टरवादियों द्वारा दूसरे धर्मों की महिलाओं यानी हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों की स्त्रियों पर अत्याचार और की पीड़ा की घटनाएँ देखने को मिलती हैं। जिहादी युवकों ने मुस्लिम लड़की नसीम को बुर्का पहनने और उसके भाई को हिन्दुस्तानी जासूसों से यानी हिन्दुओं से दूर रहने की धमकी दी है- "बुर्का पहनो, पर्दा करो, नमाज़ पढ़ो। साइकल चलाना छोड दो। गैर इस्लामी काम मत करो।" [57] बुर्का न पहनने पर वे चेहरे पर हरा रंग डाल देते थे।

जब नसीम नहीं मानता तो आतंकी उसे उठाकर ले जाते है और बेरहमी से पीटते हैं। जिहादी जिसकी लड़की से शादी करना चाहते हैं उसके दरवाज़े पर मेहन्दी का एक पाकेट रख देते हैं। वे लड़कियों पर बलात्कार करते हैं और उनके साथ क्रूर व्यवहार करते हैं। "वहाँ कमला-विमला के वक्ष काटकर, कान में डेजहोरू की तरह लटकाए जा रहे थे, बांडीपुरा के टुक्कर गाँव की युवती को भोगने के बाद, ज़िन्दा ही आरी से दो हिस्सों में काटा जा रहा था।" [58]

जिस घर में डॉ. कात्या को अगवा कर रखा गया था, उस घर पर आतंकवादियों ने मालकिन से जबरन मकान कब्जा कर लिया है। वे उस घर में लड़कियों को उठाकर ले आते हैं और उन पर अत्याचार करते हैं। जब एक लड़की को बूढ़ी मालकिन द्वारा भागा देती है, तो आतंकवादियों ने उस बूढ़ी मालकिन को ही नंगा कर दिया जाता हैं। साथ ही वे उसकी चौदह साल की बेटी पर भी अत्याचार करते हैं और उन्होंने उसके शरीर के अंगों को कपड़े की तरह फाड़ देते हैं, जिससे वह पागल हो गई है। "वहशी दरिंन्दों ने सचमुच उसे चीर दिया था। उसे सर्जरी की ज़रूरत थी। उसकी योनि बुरी तरह चिर गई थी। मल और मूत्र द्वार एक हो गए थे।" [59]

3.3 स्वभाव विशेष के आधार पर स्त्री स्वत्व के विविध रूप

स्त्री स्वत्व के यथार्थ चित्रों, नई-नई संवेदनाओं और अनेक नए-नए स्वरों का निर्भीक, औपचारिक तथा विलक्षण चित्रण उपन्यासों में सहजता से प्रदर्शित होता है। उन्होंने स्वभाव विशेष के आधार पर स्त्री स्वत्व के अनेक तहों को परत-दर-परत खोला है।

3.3.1 साहसी स्त्री

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की अरुन्धती एक साहसी स्त्री है। खिचड़ी अमावस्या की रात अँधेरे में पति की गैर-मौजूदगी में घर में चोर घुस आता है। पहले तो वह सोचती है कि यक्ष देवता खिचड़ी की पत्तल को झूठी करने के लिए पधारे होंगे, लेकिन जब चोरों द्वारा संदूकची खोलने की करतूत देखती है, तो अरुन्धती अपने पति का वेश धारण कर लेती है और बच्चों को रुलाकर चिल्लाती है। वह भागते हुए चोर की टाँग को दाँतों से काट कर लेती

है और पड़ोसियों को पुकारती है। चोर जल्दबाजी में खिडकी को दरवाज़ा समझकर तीसरी मंज़िल से कूद जाता है और अपनी जान दे देता है। इस घटना से चोरों के मन में डर उत्पन्न होता है- "अमुक गली बड़ी मनहूस जगह है, वहाँ जो भी चोर कदम रखेगा, जान से हाथ धोएगा, वहाँ अरुन्धती-सी मर्दमार औरतें बस्ती हैं।" [60]

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की रत्नी चाची भी अरुन्धती की तरह साहसी हैं। पति और परिवार के अन्य सदस्यों की मृत्यु के पश्चात जब उन्हें अन्तिम संस्कार के लिए किसी का सहयोग नहीं मिलता तो वह साहसपूर्वक सारी ज़िम्मेदारी निभाती हैं। अपने पति की मौत से उजड़ यानी बर्बाद हो चुके घर को फिर से बसाने के लिए वह 'दीवान' का हाथ थामकर पुनर्विवाह भी कर लेती है। लोग कभी भी बिरादरी के विरोध की चिन्ता नहीं करती है।

'कथा सतीसर' उपन्यास की कात्यायनी को एक साहसी व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। भाई का दोस्त जवाहर जब कात्या की सुन्दरता का वर्णन करके उसके प्रति अपने प्यार का इज़हार करता है तो, इस पर कात्यायनी कहती हैं- "मैंने भी पढ़ा है भाई साहब, कि ईश्वर ने पुरुष को बनाया तो सभी मसाले खत्म हो गए, पर स्त्री को बनाना भी ज़रूरी था, सो उसने प्रकृति से कुछ चीज़ें उधार लेकर स्त्री का निर्माण किया, उसमें लताओं, फूलों, हिरणों, कोयलों आदि से जहाँ कुछ विशेषताएँ लीं वहीं अग्नि और शेरनी से भी कुछ खूबियाँ लीं। जवाहर भैया, और तो मैं ज़्यादा नहीं जानती, पर मेरे पास शेरनी की दहाड़ और पंजे तो ज़रूर हैं।" [61] कश्मीर के कर्फ़्यू और आतंक भरे माहौल में वह रात के सन्नाटे में भी मुसीबत में फँसी एक औरत को इलाज मुहैया कराने के लिए निकल पड़ती है। इस समय, उसका और उसके पति का अगवा कर लिया जाता है, फिर भी वह साहसपूर्वक आतंकवादियों पर इलाज करती है, उनका दिल जीतती है और रिहा हो जाती है।

3.3.2 सेवाभावी स्त्री

'ऐलान गली ज़िन्दा है' उपन्यास की रूपा कुंदन से प्रेम करती थी। कुंदन की मृत्यु के पश्चात वह समाज सेवा का व्रत लेती है और शान्तिपूर्ण पृथक जीवन व्यतीत करती है साथ ही समाज सेवा में इतनी लीन हो जाती है कि वह अपने जीवन के प्रति पूरी तरह से

लापरवाह हो जाती है। अवतारे के टोकने पर रूपा कहती हैं- "देखो न, सुबह पाँच बजे मेरा दिन शुरू हो जाता है। घर भी देखती हूँ, स्कूल पढ़ाने जाती हूँ और शाम को, घर पर ही सिलाई स्कूल खोल रखा है, उसे देखती हूँ। शाम को सातेक बजे खाली हो जाती हूँ, फिर घण्टा-दो घण्टा खाना बनाने-खाने में निकल जाता है। रात को दिमाग और दिल दोनों इतने थके होते हैं कि नीन्द के सिवा कोई दूसरी बात सोझती ही नहीं।" [62]

'कथा सतीसर' उपन्यास की नायिका कात्यायनी एक समर्पित सेवाभावी डॉक्टर हैं। कश्मीर में आतंक के समय, जहाँ खुलेआम हत्या, अत्याचार और अपहरण की घटनाएँ हो रही हैं, वह उस अवस्था में भी एक औरत की जान खतरे में है, यह सुनकर आधी रात को इलाज करने के लिए निकल जाती है। रास्ते में कात्यायनी और उनके पति कार्तिकेय को अगवा किया जाता है। ऐसी स्थिति में भी वह बलात्कारित लड़की का इलाज करती हैं और कहती हैं- "मैं यहाँ से छूट जाऊँ, तो तुम इसे मेरे अस्पताल ले आना। मैं इसका ऑपरेशन करूँगी। ये अच्छी हो जाएगी, इसे इलाज की ज़रूरत है।" [63] इतना ही नहीं, वहाँ पहरा देनेवाला फ़याज शूह की बीमारी से पीड़ित है और वह उसका भी इलाज करती है। साथ ही फ़जी, तारा जैसी लड़कियों के गर्भपात कराकर उन्हें नई ज़िन्दगी देने की कोशिश भी करती है। वह कमज़ोर फ़जी को बचाने में विफल रहती है, लेकिन तारा को लोगों की उलाहना से बचाती है। जब मुस्लिम यूसुफ़ की बेटी के साथ आतंकवादियों द्वारा बलात्कार किया जाता है, तो वह उसका इलाज भी करती है। अस्पताल में इलाज के दौरान ये पीड़ित दुखी लोगों पर इलाज करते समय उन्हें खाने-खाने की भी सूद नहीं रहती हैं।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी अपने जीवन और धन का अधिकांश हिस्सा अविवाहित रहकर अपने घर और समाज के लिए खर्च कर देती है। अपने परिवारवालों से विरक्त होकर, वह आदिवासियों की शिक्षा और सुधार में खुशी तलाशती है और वह श्री. पंडा के पास अपनी इस समाजसुधार कार्य की इच्छा प्रकट करती है- "मैं कॉलेज में पढ़ाती हूँ और उस अर्थ में समाज-सेविका नहीं हूँ कि नियमित रूप से यहाँ आकर उनके साथ काम कर सकूँ। पर शनि-रवि मेरी छुट्टी रहती है। हफ़्ते के ये दो दिन मैं यहाँ आया करूँगी। और उनके

सोच और समस्याओं को समझने की कोशिश करूँगी। हो सका तो इन्हें समय की धारा के साथ बदलने की प्रेरणा भी दूँगी।" [64]

3.3.3 स्त्री के खिलाफ स्त्री

चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों के द्वारा 'स्त्री के खिलाफ स्त्री' एक बाधा बनकर खड़े होने के कई कारणों पर प्रकाश डाला है। 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास में मीना के बचपन और बेमेल विवाह के ज़रिए उसे त्रासदीपूर्ण, दुखद रूप से बेकार ज़िन्दगी में झोंकने की पूरी ज़िम्मेदारी चाची पर निर्भर है तो मीना की बीजी के पति के साथ शारीरिक अवैध सम्बन्ध बनाकर एक खुशहाल मध्यवर्गीय सुखसम्पन्न दाम्पत्य जीवन को विघटित करने की पूरी ज़िम्मेदारी मीना पर ही निर्भर है।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी ने अपने सभी भाई-बहनों की शादी करवा दी, जिन दो भाइयों की शादी हुई उनकी बहुएँ तो ऐसे घरों से आती थीं जहाँ लड़कियाँ अपने माता-पिता के घर में नहीं रहती थीं। जब दोनों बहुएँ आईं तो दोनों को यही चिन्ता और आशंका होने लगी कि कुनी कब तक इस घर में रहेगी। ऐसा उन लोगों के व्यवहार से स्वयं कुनी को भी महसूस हुआ। जब कावेरी को लगा कि कुनी किसी भी प्रकार में उसको सुख देने वाली नहीं है, तब कुनी ने न केवल घर की चाबियाँ अपनी बड़ी बहू मंदा को सौंपी दीं, बल्कि खुद के तबादले के लिए आवेदन पत्र दे दिया और उसने अपने घर में हस्तक्षेप करना भी बन्द कर दिया। 'बाकी सब खैरियत है' की सास हमेशा बहू पारुल के खिलाफ नज़र आती हैं।

3.3.4 प्रेमी के इन्तज़ार में स्त्री

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की नायिका कुनी का प्रेमी सिद्धार्थ विदेश जाने से पहले कुनी से मिलने आता है और उसके लिए दो साल तक इन्तज़ार करने की ज़िद करती है। कुनी अब तो तैंतीस की हो चुकी थी, तब वह पैंतीस साल की हो जाएगी। सिद्धार्थ उनसे छोटे थे और यह चेतावनी कुनी के मन में हमेशा रहती थी, और वह सोचेती है, "कुनी! तेरे सुख के दिन अब समाप्ति पर हैं। आखिरी उम्मीद की तरह मुझे जगन्नाथ याद आए। आस्थावादी

हूँ न! मैं सिद्धार्थ के लिए प्रार्थना करना चाहती थी। उसके साथ बिताए वक्त को जगन्नाथ की साक्षी देना चाहती थी और शायद भगवान को याद दिलाना चाहती थी कि असम्भव को सम्भव तुम ही कर सकते हो।" [65] कुनी ने मन ही मन प्रार्थना की कि सिद्धार्थ के दिल का एक कोना सदैव उसके लिए आरक्षित रहे।

3.3.5 विचार और भावना के द्वन्द्व में फँसी स्त्री

'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास की मीना प्रताप सिँह से प्रेम करती है, लेकिन वह जानबूझकर वैवाहिक सन्तोषपूर्ण दाम्पत्य जीवन बितानेवाले प्रतापसिंह से दूर रहती है, ताकि उसका घर-परिवार उजड़ न हो जाएँ। वह प्रताप सिँह के अपने जीवन में आने को उसकी पत्नी बीजी द्वारा दिया गया विश्वासघात मानती है। इसलिए वह उनसे कहती है- "तुम दीदी के पास लौट जाओ, मुझे जहन्नुम में जाने दो। मुझसे उनका घुलना सहा नहीं जाता।" [66] उसके मन में हमेशा विचारों और भावनाओं के बीच द्वंद्व चलता रहता है।

'बाकी सब खैरियत है' उपन्यास की पारुल में हमेशा कुछ करने और बनने की ललक रहती है। वह संगीत, चित्रकला आदि के माध्यम से अपनी भावनाओं में लीन होकर जीना चाहती है। प्रगतिशील सोच-विचारों से प्रेरित होने के बावजूद वह रीति-रिवाज़ों, मर्यादाओं, संस्कारों और प्राचीन अनावश्यक मूल्यों के बीच दबकर चुप बैठने के लिए मज़बूर हो जाने से खुद का स्वत्व नष्ट होकर विचार और भावना का संघर्ष में रह जाती है। "पारुल के भीतर की कोई आवाज़ उसे डाँटने लगती है- तुमने अपने कान बन्द कर लिए। तुम अपने भीतर की कोई हौंस, कोई आवाज़ सुन-समझ नहीं पाईं। तुमने आँखें बन्द कर लीं कि तुम अपने भीतर बनते विराट चित्रों को न देख सको। तुम्हारे भीतर पंख फड़फड़ाता एक नन्हा पाखी उन्मुक्त आकाश में उड़ान भरना चाहता था, खुली साँस लेना चाहता था, तुमने सभी दरवाज़े-खिड़कियाँ बन्द कर लीं। तुम उसकी घुटन-भरी मौत की ज़िम्मेदार हो। पारुल को लगता है- यही मौत है- यह एहसास कि तुमने अपने भीतर के जीवन्त मानस का गला घोंट दिया है। किसलिए? ज़रा सोचो! फिर तुम्हें तुम्हारा प्राप्य मिल गया? तुम किसी को सुख, किसी को शान्ति और किसी को सुकून दे सकीं? तुम्हारे एकतरफ़ा प्रयास थकान के सिवा तुम्हें दे भी क्या सकते

थे?" [67] पारुल के मन में कई भावनाएँ उमड़ती हैं, परन्तु वह विचारों के स्तर पर खुद को सफलता नहीं दिला पाती है। कई बार पारुल जो महसूस करती है उसे आत्मसात करती लेती है लेकिन उसे ठोस रूप नहीं दे पाती।

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी परम्परागत संस्कारों से बद्ध है। वह सिद्धार्थ की ओर आकर्षित होती है, उससे प्यार करती है, परन्तु इसे समाज के सामने जाहिर नहीं करती। मति भी हेमन्त दास से प्रेम करती है, लेकिन जब उसे पता चलता है कि वह पहले से ही शादीशुदा है तो वह द्वन्द्व में पड़ जाती है।

3.3.6 दहेज प्रथा से विरोधी स्त्री

'अपने-अपने कोणार्क' उपन्यास की कुनी को एक पढ़ी-लिखी कामकाजी महिला होने के बावजूद भी सही समय पर योग्य वर नहीं मिला। लेकिन बप्पा को विश्वास था कि- "शादी-ब्याह संजोग, किधर-कब-किसके साथ, इस पर आदमी का वश नहीं।" [68] कुनी को एक रिश्ता आया लेकिन उनकी माँगें काफी ऊँची थीं। "इतना गहना-गुरिया, इतना नकद, साज़ो-समान, रंगीन टी.वी. और कार! स्कूटर तो है प्रभाकर के पास।" 'कार' को छोड़कर समझौता किया जा सकता था, पर वे लोग अड़े रहे। बप्पा सोच में पड़ गए, " स्कूटर तक तो चलो ठीक था। पहलौटी की बेटी है। थोड़ा इधर-उधर से ले-देकर रकम पूरी कर लेंगे। प्रॉविडेंट फंड का पैसा रखा है अभी। लेकिन कार? कहाँ से आएगी कार? ... "तुम ज़रा समझा दो भाई, मैं चार बेटियों की पिता, रिटायर्ड, कहाँ से लाऊँगा कार?" [69] दहेज के लेन-देन को लेकर जब घर में ज़्यादा चख-चख मची हुई तो कुनी ने साफ कह दिया कि वह बिकाऊ नहीं है, और उसका मोल न किया जाए, "मैंने आजन्म कुँवारेपन को स्वीकृति दी और अपने-आपको घर से कुछ ज़्यादा ही जुड़ा गया। वही जैसे मेरी आखिरी मंज़िल हो गया। कोई कभी शादी की बात करता तो मैं गुस्से में भर उठती। शादी का सौदा? तन के व्यापार के लिए सामाजिक ठप्पा! नहीं, मुझे यह सौदा मंजूर नहीं था। बस! मुझे मेरा घर ही भला।" [70]

'कथा सतीसर' उपन्यास के बसंता दहेज प्रथा की तीव्रता समझाते हुए कहते हैं कि- "हमारे माता-पिता घर की खिड़की-दरवाज़े भी निकालकर हमारे ससुरालवालों को भेज दें, तो

भी उन्हें लगेगा कि देने में कंजूसी कर गए। काश राज़ा! हमारे यहाँ भी बनियों की तरह दहेज़-प्रथा होती। कम-से कम कोई निश्चित रकम तो तय हो पाती! यहाँ तो, दहेज-प्रथा नहीं है, पर बेअंत उम्मीदें हैं। लड़कियाँ नाती-पोतेवाली हो जाती हैं, मायके के नेग-शगुन चलते रहते हैं। माँ-बाप गुज़र जाएँ तो भाई लोग ऋण चुकाते हैं।" [71] मायके वालों को नेग सगुन में लड़की को जीवन भर कुछ न कुछ देना पड़ता है। माँ-बाप के बाद भाई सम्बंधियों को यह ऋण चुकाना पड़ता है।

निष्कर्ष

चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के आन्तरिक और बाह्य जगत की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण किया है, साथ ही निम्न एवं मध्यम वर्गीय परिवारों में स्त्रियों की समस्याओं और स्त्री अस्मिता के विभिन्न रूपों पर भी प्रकाश डाला है। लेखिका ने दहेज प्रथा को अभिशाप मानते हुए अविवाहित स्त्रियों के अस्तित्वहीनता को भी चिन्हित किया है। इन सबके बावजूद आज महिलाओं ने समाज में अहम मुकाम हासिल किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, समकालीन महिला लेखन, पृ: ३६.
2. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: २९.
3. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी उपन्यास, पृ: १८१.
4. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ३७.
5. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: ९.
6. गोपाल राय, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ: ३७७.
7. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: ८.
8. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ४४.
9. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: २९.
10. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी उपन्यास, पृ: १८१.
11. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: १६४.
12. डॉ. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी उपन्यास, पृ: १८२.
13. चन्द्रकान्ता, मेरे भोज पत्र, पृ: ७२.
14. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर (कथा सतीसर क्यों?), पृ: VIII
15. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ३९.
16. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ९४.
17. वही, पृ: १०८.
18. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: १४५.
19. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ७२.
20. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: १३५.
21. वही, पृ: ११२.
22. वही, पृ: ५२.
23. वही, पृ: ११२-११३.

24. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: १९७.

25. वही, पृ: ६८.

26. डॉ. जे. एम. देसाई, आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी, पृ: १८६.

27. सं. नन्दकिशोर मिश्र, साठोत्तरी कथा-साहित्य में श्रमजीवी नारी, भाषा अंक, नवम्बर-दिसम्बर, १९९९, पृ: ७८.

28. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ५०.

29. वही, पृ: ५१.

30. वही, पृ: १२५.

31. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: १२७.

32. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: ८२.

33. वही, पृ: ८५.

34. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ४०.

35. डॉ. योगेश सूरी, यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ, पृ: १९२.

36. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: १२६.

37. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: ११९.

38. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: ५१.

39. वही, पृ: ५५.

40. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ४२४.

41. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: ८०.

42. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: २८.

43. वही, पृ: ३७-३८.

44. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, चन्द्रकान्ता, पृ: ९१.

45. वही, पृ: १०१.

46. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ७०-७१.

47. वही, पृ: ७१.

48. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ३२.

49. वही, पृ: ७६-७७.

50. वही, पृ: ७९.

51. चन्द्रकान्ता, यहाँ वितस्ता बहती है, पृ: १४४.

52. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: १४२-१४३.

53. वही, पृ: १४३.

54. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: ५०.

55. वही, पृ: ५१.

56. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: ६४.

57. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ४७९.

58. वही, पृ: ५३२.

59. वही, पृ: ५५१.

60. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: १७.

61. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: २२७.

62. चन्द्रकान्ता, ऐलान गली ज़िन्दा है, पृ: १३५.

63. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ५५१.

64. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: १६९.

65. वही, पृ: १५२.

66. चन्द्रकान्ता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर, पृ: ४५.

67. चन्द्रकान्ता, बाकी सब खैरियत है, पृ: १३.

68. चन्द्रकान्ता, अपने-अपने कोणार्क, पृ: ४७.

69. वही, पृ: ४७.

70. वही, पृ: ५४.

71. चन्द्रकान्ता, कथा सतीसर, पृ: ४१७.